



लोकमित्रानें तेराव्या वर्षाचें बक्षीस.

# अनुभव-शतक.

हे

पुस्तक

वापूराव परशुरामजी रत्नपारखी.

मु० बरुड जि० उमरावजी.

गान्धी नगर केले में

खानापूर येथे

दत्तात्रय गोविंद सडेकर

व्यानी आपल्या "धनंजय" आपत्तान्यांत

आपुन प्रसिद्ध केलें.

---

आवृत्ति १ ला.

शके १८२४ शोभननाम संवत्सरे मन १९०३ इ.

---

[ या पुस्तकाची मादकी प्रसिद्धकृत्यानें आपलेकडे  
देविली आहे. ]



श्री

सकल गुणसिद्धि पद प्रीति मित्रवयं.

दत्तात्रय गोविंद मडेकर

लोकमित्रकर्त

व

धनंतर प्रेमचे

मालक

स्वातंत्र्य मित्र केळसा.

यांस

त्यांचा आजादिक मित्र

दाने

हें पुस्तक

मित्र प्रेमभावामुळे आणि त्यांच्या अनेक

गुणांचे शानक ह्मणून त्यांच्या

परवानगीने अर्पण केले असे

बापूराव परजुराम

रत्नरावणी

वैद्य अर्पण फोटोग्राफर,

वरुड.



## प्रस्तावना.

आमचा वैद्यकीचा धंदा सतत १५ वर्षांपासून चालू आहे. नितक्या अवकाशांत आह्यांम ज्या औषधांपासून कायमचे गुण आले आहेत; अशाच औषधांचा या पुस्तकांत संग्रह केला आहे. ती औषधे भावप्रकाश, वाग्भट, मृधन, शारंगधर, चक्रदत्त, इ० प्राचीन व अर्वाचीन लोकमान्य ग्रंथांतूनच घेतलेली आहेत. ज्या औषधांपासून जमा गुण आले त्याचे शेकडा प्रमाण बसवून ते प्रमाण औषधांच्या पुढेच आकड्याने दाखविले आहे.

पुष्कळ लोकांनी वैद्यकीचे ग्रंथ लिहिले पण त्यांनी कोणत्या औषधांचा गुण किती येतो, हे स्पष्टपणे लोकांम कळविले नाही. जगाट ग्रंथांत औषधी देऊन त्यांचे मोहगम गुण अतिशयोक्ताने वर्णन केले आहेत; अशा अतिशयोक्ताने गुण वर्णन केलेल्या औषधांचा आत्मी अनुभव घेऊन पाहिला पण त्यांपासून आह्यास तादृश उपयोग वढून आला नाही. ही दिलगिरीची गोष्ट आहे.

आह्या लिहिलेली सर्व औषधे सर्व प्रकारच्या दोष प्रकृतीस आणि सर्व देशांतील ऋतुमान भेदाने सर्वत्र लागू पडतील अशीच आहेत. त्यांपासून अपाय होण्याचा बिलकूल संभव नाही. प्रत्येक औषधीप्रयोगांतील जिनसा प्रसिद्ध असून त्या सर्व ठिकाणी मिळण्यासारख्या आहेत. आणि यांत न होण्यासारखा एकही प्रयोग आह्या लिहिला नाही.

वर्तमानपत्रांत जशा औषधांच्या भपकेदार जाहिराती

दिलेल्या असतात आणि औषधांची गुणदर्शक नावे चम-  
 चमित करून दिलेली असतात, तसा प्रकार आमचे पुस्त-  
 कांत बिलकुल नसून, औषधांस जी परंपरा नावे चालत  
 आली तीच कायम ठेविली आहेत. जे लोक जाहिरातीवर  
 भुलून त्यांनीच औषधे घेऊन शेवटी फसतात व गुण न  
 आल्यामुळे पैसे पाण्यात गेल्याचा पश्चात्ताप करितात;  
 अशा लोकांस आमचे हेच मागणें आहे की, आमच्या या  
 पुस्तकांतून औषधी प्रयोग केल्यास त्यांची शरिरें निरोगी  
 राहून त्यांना मदा मोल्य प्राप्त होईल. व बिनाकारण  
 पैशांची धुकवाणी होणार नाही.

उद्यांना या पुस्तकांतील औषध स्वतः घरीच तयार  
 करणें असल्यास व त्यांना देशपरम्वें औषधांची ओळख  
 नसल्यास त्या मदगृहस्थांनी माझ्याकडून प्रयोग समजून  
 घेतल्यास त्यांस भी मोठ्या आस्थेनें प्रयोग समजून देईन.  
 प्रयोगांतील औषधी कदा टिकाणी मिळत नसल्यास  
 मोठ्या आनंदानें योग्य किमतीस औषधी आणवून देईन.  
 कदाचित् कोणी ग्रहस्थ औषधी मजकूरून करवून  
 मागतील त्यांस योग्य स्वतःनें काळजीपूर्वक औषधें करून  
 पाठवीन !

हे पुस्तक प्रत्येक वैद्य क्षणविचारानें जवळ बाळगावें,  
 तसेच प्रत्येक कुटुंबवत्सलानेंही जवळ बाळगावें म्हणजे  
 वैद्यांची किंवा डाक्टरांची बडोबडी तुंबडी मरावी लाग-  
 णार नाही. या पुस्तकापासून किती फायदे आहेत  
 याची प्रिती अनुभवांनीच येणारी आहे; म्हणून अशा  
 अमोल्य पुस्तकाचा लाभ लहान मोठ्यांनीं दवडूं नये.

या पुस्तकांत कांदे, ( क्यार ) चूर्ण, गुटिका, मात्रा,  
 मसं आणि प्रसिद्ध वनस्पतींचे योग दिष्टे आहेत. ते सर्व

अनुभवजन्य ज्ञानानें पूर्ण प्रचीर्तीम आलेले आहेत. पुस्तकांन शेतटीं पुरवणी जोडून त्यांत प्रयोगास लाभणारी उद्युक्त माहिती देऊन कठिण शब्दांचा कोश दिलेला आहे.

सारांश, हें पुस्तक संग्रही असल्याने त्याचा प्रत्येक मानवी प्राण्यास किती फायदा होईल याचा अनुभव पाहण्याने काम वाचकांवरच सोपवितां.

शेतटी विद्वज्जनांस हीच प्रार्थना आहे कीं, यांतील देणांकडे लक्ष न देतां “ हंसक्षीर न्यायानें ” गुण ग्रहण करून मला उत्तेजन दिश्यास पुढील आधुत्तींत विशेष सुधारणा करण्यास उभेद येईल.

ज्या परमेश्वर आणि जगच्चलक प्रभूच्या कृपेनें हें काम शेतटीस गेलें, त्यास अनन्यभावानें शरण होऊन अर्शाच लोकमेवा मजकटून सदोदित घडावी म्हणून प्रार्थना करितों.

सर्गाचा नम्र.

|             |   |                            |
|-------------|---|----------------------------|
| मु० वरुड    | } | बापूराव परशुराम रत्नपारखी. |
| जि० उमरावती |   | वैद्य आणि फोटोग्राफर.      |



## अनुक्रमणिका.

| विषय.                | पृष्ठ. |
|----------------------|--------|
| १ लोर्लिचराजचूर्ण    | १      |
| २ कांकायन पाक        | १      |
| ३ शूलक्षारगुल .....  | २      |
| ४ अग्निदीपकगुटी      | २      |
| ५ क्षयहारकगुटी       | २      |
| ६ असृजप्रभागुटी      | ३      |
| ७ अतिविपादि काढा     | ३      |
| ८ अनन्तादिचूर्ण      | ४      |
| ९ आम्लकोवकई          | ४      |
| १० वृद्धगंगाधर चूर्ण | ४      |
| ११ मुरणपाक           | ५      |
| १२ दशमुष्ठादि काढा   | ५      |
| १३ कूटजावेलह         | ६      |
| १४ कम्तूरीगुटिका     | ६      |
| १५ लवंगादिचूर्ण      | ७      |
| १६ निंबदिचूर्ण       | ७      |
| १७ विजयचूर्ण         | ७      |
| १८ चक्रभई तैल        | ८      |
| १९ कांचन गुग्गुल     | ८      |
| २० पाणिभद्रमलम       | ९      |
| २१ कर्पूरादि गुटिका  | ९      |
| २२ लवंगादि वटी       | १०     |
| २३ भृगु हरीतकी       | १०     |



|                           |      |      |    |
|---------------------------|------|------|----|
| २४ उपदंशारि मलम           | .... | .... | ११ |
| २५ गगावनयोग ....          | .... | .... | ११ |
| २६ कूटजादि काढा           | .... | .... | ११ |
| २७ रास्नादि काढा          | .... | .... | १२ |
| २८ पुनर्नवादि चूर्म       | .... | .... | १२ |
| २९ चंद्रप्रभागटी ....     | .... | .... | १२ |
| ३० पष्टिकर्म चूर्म        | .... | .... | १३ |
| ३१ मधुपष्टिचूर्ण ....     | .... | .... | १३ |
| ३२ कामदेवभादक             | .... | .... | १३ |
| ३३ नागमिहचूर्ण ....       | .... | .... | १४ |
| ३४ लघूनयटी ....           | .... | .... | १५ |
| ३५ आभ्यापत्तनाशक पाक      | .... | .... | १६ |
| ३६ गुग्गुलुपाक ....       | .... | .... | १६ |
| ३७ अगस्नि गुटिका          | .... | ...  | १७ |
| ३८ मुम्नादिचूर्म ....     | .... | .... | १८ |
| ३९ अभयादि गुटिका          | .... | .... | १८ |
| ४० अनुवामन तैल            | .... | .... | १८ |
| ४१ कूटजावलेह ....         | .... | .... | १९ |
| ४२ पाठादितैल ....         | .... | .... | २० |
| ४३ करंजबीजवर्ती           | .... | .... | २० |
| ४४ पुनर्नवादि योग         | .... | .... | २० |
| ४५ प्रमेहदर्पास्त्रगुटिका | .... | .... | २१ |
| ४६ अर्कौमुखादिकाढा        | .... | .... | २१ |
| ४७ अष्टदंशांग काढा        | .... | .... | २२ |
| ४८ वज्रहार ....           | .... | .... | २२ |

|                        |      |      |    |
|------------------------|------|------|----|
| ४९ प्रमेहहारक गुटी     | .... | .... | २३ |
| ५० आरद्रकावलेह         | .... | .... | २३ |
| ५१ खदिरमार्मगटिका      | .... | .... | २३ |
| ५२ कांचनादि काढा       | .... | .... | २४ |
| ५३ पटोलादि काढा        | .... | .... | २४ |
| ५४ वचादि काढा....      | .... | .... | २४ |
| ५५ क्षारपंचक           | .... | .... | २५ |
| ५६ पपड़योग             | .... | .... | २५ |
| ५७ मुक्तपाकहरणचूर्ण    | .... | .... | २५ |
| ५८ कामदेवचूर्ण         | .... | .... | २६ |
| ५९ अश्वत्थयोग          | .... | .... | २६ |
| ६० अष्टांगतैल          | .... | .... | २६ |
| ६१ वृद्धचिन्तामणी      | .... | .... | २७ |
| ६२ आमवाताग्निगुटिका    | .... | .... | २७ |
| ६३ अतिफेनयोग           | .... | .... | २७ |
| ६४ ज्वालानन्दरम....    | .... | .... | २८ |
| ६५ कापित्तनश्य         | .... | .... | २८ |
| ६६ शंखवटी              | .... | .... | २९ |
| ६७ विभीतकवृक्षयोग      | .... | .... | २९ |
| ६८ गोक्षुरादि गुग्गुलु | .... | .... | ३० |
| ६९ पडविंदु तैल         | .... | .... | ३० |
| ७० रोपणागुटिका         | .... | .... | ३० |
| ७१ द्वादशामृत हरीतकी   | .... | .... | ३१ |
| ७२ बिल्वक तैल          | .... | .... | ३१ |
| ७३ औदुंबर फलयोग        | .... | .... | ३२ |



| विषय.                      | पृष्ठ. |
|----------------------------|--------|
| ९९ सुवर्णमासिक भस्म ....   | ४९     |
| १०० सुवर्णमालिनी वसंत .... | ४६     |

### पूरणिका.

|                            |    |
|----------------------------|----|
| १ पारद शुद्धि ....         | ४७ |
| २ गंधक शुद्धि ....         | ४७ |
| ३ अभ्रक शुद्धि व भस्म .... | ४७ |
| ४ हिमालयी शुद्धि ....      | ४८ |
| ५ शिलाजित शुद्धि ....      | ४८ |
| ६ हिराकम शुद्धि ....       | ४८ |
| ७ हिमानी शुद्धि ....       | ४८ |
| ८ टांकणम्यागची शुद्धि .... | ४८ |
| ९ भांगेची शुद्धि ....      | ४८ |
| १० अफुची शुद्धि ....       | ४८ |
| ११ कुचल्याची शुद्धि ....   | ४८ |
| १२ गुग्गुलु शुद्धि....     | ४८ |
| १३ कलस्यापरीची शुद्धि .... | ४९ |
| १४ मोचरस शुद्धि ....       | ४९ |

### यंत्रें व अपिपुटें.

|                  |    |
|------------------|----|
| १ डमरुयंत्र .... | ४९ |
| २ दोलायंत्र .... | ४९ |
| ३ गजपूट ....     | ५० |

विषय.

पृष्ठ.

## परिभाषा.

|                       |      |      |      |    |
|-----------------------|------|------|------|----|
| १ अंगगम               | .... | .... | .... | ५० |
| २ पटपाक               | .... | .... | .... | ५० |
| ३ काटा ( कपाय )       | .... | .... | .... | ५० |
| ४ अवलेह ( लेह )       | .... | .... | .... | ५१ |
| ५ चूर्ण               | .... | .... | .... | ५१ |
| ६ गृष्टिका            | ...  | .... | .... | ५१ |
| ७ स्नेहपाक            | .... | .... | .... | ५१ |
| ८ पाक                 | .... | .... | .... | ५१ |
| ९ काठिंग शब्दांचा कोश | .... | .... | .... | ५२ |



रत्नपारखीकृत.

# अनुभव-शतक.

## लोर्लिबराजचूर्ण.

मुंठ ५ भाग, लेंडी पिंपळी ४ भाग, अजमोदा ३ भाग, ग्रावें मीठ २ भाग, बाळहिरडे १५ भाग यांत बाळहिरडे, लेंडीपिंपळी यांम तृपाचा हात लावून भाजवें व मीठही भाजून घ्यावें. या सर्वांचें सूक्ष्म चूर्ण करून ठेवावें. तें तीन माशांपासून ६ माशांपर्यंत उत्पण पाण्याच्या चोटाशी घ्यावें. हें पचनाचेंही भस्म करील ! मग भोजनाची काय कथा ! या चूर्णानें अर्जाणांचा तात्काळ नाश होतो, अग्नि प्रदीप्त होतो. शेंकडा १०० स गुण येतो !!!

## २ कांकायनपाक.

• बाळहिरड्यांचें चूर्ण २० तोळे, मिरों, निरें, पिंपळी, पिंपळमूळ, चवक व चित्रक हीं प्रत्येकी ४ तोळे, बिबबे ३२ तोळे, सुरणाचा कंद १४ तोळे व जवळार ८ तोळे या सर्वांच्या दुप्पट गूळ ( १०० तोळे ) घालून पाक करावा. हा पाक चार माशांपासून सोमेळ त्या मानानें १० माशांपर्यंत ( अग्निवट व क्षयिवट पाहून ) सेवन करावा. वर ताकांत सैधव मिळवून तें ताक घ्यावें. या प्रमाणें १४ दिवस करावें. सर्व प्रकारच्या मुळव्याघ्रींचा हटकून नाश होतो. व अग्नि प्रदीप्त उत्तम होतो. शेंकडा ८० गुण !!!

### ३ शूल क्षाराम्ल.

आल्याचा रस पावशेर, पिकल्या टिंबाचा रस अर्धो शेर, मीठ १ तोळा, मंचळ १ तोळा, सेंधव १ तोळा, पावडखार १ तोळा, सर्जोखार २ तोळा, बांगडखार २ तोळा, हे सर्व एका बाटळीत ठेवून ती बाटळी ७ दिवस तशीच टांगून ठेवावी. नंतर त्यातील तीन मासे मिश्रण १ तोळा उष्ण पाण्यांत घावें. ह्मणजे कोणत्याही प्रकारचा शूल अर्जीणें व विषचिका यांचा तात्काळ नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ९९ स चांगला येतो !!

### ४ अग्निदीपक गुटी.

शुद्ध गंधक ( जोसट तृपांत अगोवर पातळ करून तें मिश्रण फटकावून दुधांत ओतवें ह्मणजे गंधक दुधात शुद्ध होतो तो १५ तन घुलून मजकूर तो उपयोगांत आणावा. ) मिरी, सेंधव, इद्रज आणि वावडिंग, यांचें चूर्ण एकत्र करून टिंबाचे रसात घालून चण्याप्रमाणें गोळा करावी. ही उष्ण पाण्याचोवर गिळावी. अग्नि प्रदीप्त होतो, अर्जीणें व शूल यांचा नाश होतो. ७ दिवस दोन्ही वेळेस गोळ्या घ्याव्या. पथ्य साधारण करावें. शेंकडा ८९ गुण येतो !!

### ५ क्षयहारक गुटिका.

सुंठ, मिरी, जायफळ, कंकोळ, लवंग, अक्कलकारा, सुरासनी ओवा, रक्तचंदन, खडीमाखर, मनुका, पिंपळी, दालचिनी, खारीक, ह्या जिनसा एक एक तोळा, केशर २ तोळे, आफू १ तोळा, जायफळ ३ तोळे, जायपत्री, नागकेशर १।१ तोळा, व ३ वर्षांचा जुना गूळ सर्व

औषधांचरोबर, ह्या सर्वे जिनमा चागीक करून त्यांचा मध्यांत खट करवा. वाल प्रमाण गोळी करावी. मांज सकाळ एक एक गोळी घेवन करून वर सोमेळ इतकें गाईचें दूध प्यावें. वर विडा मावा. याप्रमाणें २१ दिवस करावें. परंतु औषध ४० दिवस घेतल्यास उग्र-सय, धातुसय, उग्रसतसय, जणेश्वर, ज्वर, वांति, साधारण मोकला इत्यादि विहार जाऊन वीर्यप्राप्ति होत, बल वाढतें, मनुष्य मोठा शक्तिमान होतो. पद्व-गव्हाची पोळी, सालर, तूप, गाईचें दूध, पांढरा कांदा, पिस्तूळी केळी, ज्योर्ण, शिंमोदे, उडीद, मानगमुपाची पकाशें, उन पाण्याचें स्नान व व्यायाम ३० करावीं. चाकी वज्ये. गुण शेंकडा ६३ येतो !!

### ६ अमृतप्रभा गुटी.

मिर्गि, पिपळमूळ, लवंग, दर्शनही, ओंवा, निंच, डा-ळिव, बीडजोण. काचवण, प्रत्येकी ४ तोळ, पिंपळी, जवयार, चित्रकमूळ, जिं, मुंठ, धणे, वेळनी, आवळ-कांटी हीं प्रत्येक आठ तोळ, ह्या सर्वांचें चूर्ण करून त्यास निंचाच्या रमाच्या तीन भागां वाट्या. गोळ्या वालप्रमाण करून वाळवून लायेंत मुकवाद्यात. एक गोळी आल्या-च्या रमांत मिळवून द्यावी. खणजे अजीणाचा नाश हो-ऊन अग्नी प्रदीप्त होतो. गळ्यांनील जळनी व आम्लपित्ता-चा ७ दिवसांत नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ९० प्र-माणानें येतो.

### ७ अतिविषादि काढा.

अतिविष, नागरमोथा, वाळा, धायटीफूल, कुड्याची-



साल, लोध्र व पाहाडमूळ, यांचा काढा प्याळा असतां संग्रहणी, सर्व ज्वर, अरोचक, अग्निमांद्य यांचा नाश होतो. व धातूची वृद्धी होते. याचा गुण संग्रहणीवर शेंकडा ६८ व ज्वरावर शेंकडा ९० आहे.

### ८ अनंतादिचूर्ण.

धमामा, वाळा, नागरमोथा, मुंठ, आणि कुटकी यांचें चूर्ण करून तें सूर्योदयापूर्वी सुखोष्ण पाण्याशी घेतलें असतां सर्व ज्वरांचा नाश होऊन अग्नी प्रदीप्त होतो. यांत रेचक गुण आहेत. गुण शेंकडा ८५ येतो !!

### ९ आम्लकोचकई.

आंवळ्यांस किंचित वाफ देऊन त्यांचीं टरफलें बारिक वाटावी. नंतर त्यांत हिंग, जिरे, भिरें, पिंपळी, मुंठ, थणे, दाळचिनी, सेंधव, पादेलोण, हिरडे, मीठ, हीं बारिक करून घ्यावी. आणि त्याच्या पैशाएवढ्या वड्या करून वाळवाव्या. ह्या वड्या फार रुचिकारक व पाचक आहेत. याचा शेंकडा १०० स गुण येतो. एक वडी प्रातःकाळी भक्षण करावी.

### १० वृद्धगंगाधर चूर्ण.

नागरमोथे, टेंदू, मुंठ, धायटीचीं फुलें, लोध्र, वाळा, कोंबळें बेलफळ, मोचरस, पहाडमूळ, इंद्रजव, कुड्याची साल, आंब्याची काय, अतिविष, लामेरी, ह्या चौदा औषधांचें चूर्ण प्रत्येक वेळीं तीन किंवा चार मासेप्रमाण तांदुळाचें धुवण व मध यांतून प्यालें असतां प्रवाहिका ( हृषण ) बंद होते. आणि सारे अतिसार आणि संग्र-

हणी ही लवकर जातात. या औषधानें नदीच्या वेगा-  
सारखा अनिमागचा वेग असला तरी बंद होतो. औषध  
७ दिवस द्यावे. यानें शेंकडा ७० गुण अतिसारावर  
येतो. पण संग्रहणीवर शेंकडा ४५ गुण आक्षान्स दिसला.

### ११ मुरणपाक.

वाळलेल्या मुरणाचा कंद ३२ भाग, चित्रक ११ भाग,  
मुंठ ४ भाग, मिर्च २ भाग, याप्रमाणें सारी औषधे चूकून  
चूर्ण करून त्या चूर्णाचे दुप्पट गुळाचा पाक करून  
औषध मिळवून देवावे. हा पाक अग्नि, चढ पाहून ४  
माशांपासून १० मासेपर्यंत सकाळीं मध्यासकाळी भक्षण  
करावा. क्षणजे मूळव्याधीचा हटकून नाश होतो. याचा  
गुण शेंकडा ६८ आहे.

### १२ दशमूळादि काढा.

मालवण, पिठवण, रिंगणी, डोरली, गोखरू, बेल,  
ऐरण, टेंदू, शिवण, पाडक यांच्या दहा मूळांना दशमूळ  
ह्मणतात. यांचा काढा पिंपळीचें चूर्ण घालून त्याचा क्षणजे  
वात, कफज्वर, मन्निपातज्वर हे हटकून दूर होतात.  
बालेंत स्त्रियेचा कोणताही विकार व ज्वर असला तरी  
जातो. आणि शोष, शैत्य, भ्रम, शरिरास येणारा घाम,  
सोकळा, दमा, हृदय ओढत्यामारवें होवें तो विकार,  
घसा चरणें, बगवत्यांची वेदना, मांषड, मस्तकशूळ,  
इ० मन्निपातांत होणारे विकार यांचाही नाश होतो.  
( रुईद, पिठवण, रिंगणा, डोरली, गोखरू, बेल, ऐरण, टेंदू,  
शिवण, मरयटी. ) या दशमूळांचा कषाय आक्षी देऊन

भाजलेला हिंग, पाहाडमूळ, सज्जीखार, जवखार, दारुहळद, चवक, इंद्रजव, सोंफ, पंचलवण, पिंपळामूळ, बेलकाचरी, अजमोदा हीं सर्व औषधें समभाग घेऊन वख्खगाळ चूर्ण करावें. ते उष्ण पाण्याशीं चार मासे प्रमाण भक्षण करावें. क्षणजे त्रिदोषयुक्त असलेला उपदंश, श्वास, शोष, उचकी, खोकला, भगंदर, कुक्षिशूल, वायगोळा, उदररोग, प्रमेह, पांडुरोग, अंत्रवृद्धि, संग्रहणी, विषमज्वर, जीर्णज्वर, उन्माद, इत्यादि रोग याच्या भक्षणानें दूर होतात. हें चूर्ण फारच गुणकारी आहे. याचा अनुभव आह्मांस शेंकडोंवेळां आला आहे.

याचा गुण शेंकडा उपदंशावर ३९; श्वासावर ६८. शोष, उचकी, खोकला यांवर ९९; कुक्षिशूल, वायगोळा, उदर यांवर ४०. प्रमेह, पांडुरोग, अंत्रवृद्धि यांवर ९८; संग्रहणीवर गुण आला नाही. विषमज्वर व जीर्णज्वर ९८; उन्मादावर २७ गुण!!

### १८ चक्रगर्दनतैल.

वावडिंगाच्या मुळ्यांचा अष्टमांश काढा करून त्यांत तितकाच माक्याचा रस मिळवावा. यांच्या समभाग तिळाचें तेल मिळवून हळक्या आंघेनें तेल शेष राहीपर्यंत पक्क करावें. नंतर त्यांत तेलाच्या चौथा भाग शेंदूर मिळवावा. व एक जीव करावें. याच्या लेपानें गंडमाळा असाध्य स्थितींत असल्या तरी नाश पावतात. याचा गुण शेंकडा ९२ आहे.

### १९ कांचन गुगुळ.

कांचनवृक्षाची ( कचनार ) साल ९ भाग, सुंठ १ भाग,

पिंपळी १ भाग, मिर्रे १ भाग, हिरळ्याची साल ५ भाग, बेहळ्याची साल ५ भाग, आवळे ५ भाग, वायवर्णाची साल २॥ भाग, दालचिनी १ भाग, पत्री १ भाग, विळायची १ भाग, यांचें वख्खगाळ चूर्ण करून याच्या सम-भाग शोधलेला गुगुळ मिळवावा. त्यांतून ४ मासे प्रमाण प्रातःकाळी पाण्याबरोबर सेवन करावा. ह्मणजे गंडमाळा, गलगंड, अर्बुद, गांठ, वायगोळा, कोड, भगंदर यांचा ४० दिवसांत नाश होतो. याचा गुण शेंकडा गंडमाळेवर ८२; अर्बुद, गांठ व वायगोळा यांवर ७०; भगंदरावर ६५; कूष्ठावर ५९; पांढरें कोड दुरुस्त झालें नाहीं व गलगंडावरही गुण आला नाहीं.

## २० पारीभद्र मलम.

कडूनिंबाच्या पानाचा रस एक शेर काढावा, नंतर गाईचें तूप पावशेर कढईत गरम करावें. तूप पातळ झाल्यावर त्यांत राळ २ तोळे मिळवावी. नंतर वरील काढलेला रस त्यांत टाकून अग्निर थोडा गाढ करावा. त्यांत कात ( पांढरा ) ६ मासे, मोरचून ६ मासे, मुर्शिड-सिंग ६ मासे, यांचें बारीक चूर्ण मिळवून एकजीव करावें. त्याची पट्टी ( स्वच्छ रुपड्यावर मलम लावून ) ब्रगावर लावावी. निश्चयानें असाध्य ब्रग दूर होता. नाडीवणावरही फारच चांगला उपयोग होतो. याचा गुण शेंकडा ९० आहे.

## २१ कर्पूरादि गुटी.

भीममेनी कापूर ५ मासे, कस्तुरी ५ मासे, लवंग ५ मासे, मिर्रे १० मासे, पिंपळी १० मासे, बेहळ्याची साल ( फळबरील ) १० मासे, कोळिजन १० मासे, डाळिंब

साल ९ मासे, खैराची साल ९ तोळे ( ६० मासे ) यांचें वस्त्रगाळ चूर्ण करून आल्याच्या रसांत चण्याप्रमाणें मोळया कराव्या. एक गोळी खावल्यानें, श्राम, कफ, खोकला, शैत्य यांचा हटकून नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ९८ येतो.

### २२ लवंगादिवटी.

लवंग ११ तोळा, मिर्च ११ तोळा, वेल्ड्याच्या फळां-  
वरील साल ११ तोळा, खैरसाल ११ तोळा यांचें बारीक चूर्ण  
करून बाभळीच्या अंतामातीच्या काळ्यांत खल करावा.  
बाल प्रमाण गोळी बांधावी. दररोज तीन गोळ्या ७  
दिवस खाल्यानें खोकला दूर होतो. याचा गुण शेंकडा  
७४ आहे.

### २३ भृगुहरीतकी.

करटोळीचें पंचांग आणून ( १०० तोळे ) त्यांत ४  
शेर पणी घालून काढा चौथाई करावा. त्यांत रंगारी  
हिरडे १०० शिजवावे. शिजल्यावर हिरव्यांतील विया  
काढून टरफलाचें सुकवून चूर्ण करावें. १०० तोळे जुन्या  
गुळाचा पाक करून त्यांत तें चूर्ण मिळवावें. नंतर त्यांत  
सुंठ ४ मासे, मिर्च ४ मासे, पिंपळमूळ ४ मासे, दाल-  
चिनी ४ मासे, पत्री ४ मासे, नागकेशर ४ मासे, विळा-  
यची ४ मासे, ह्या जिनसांचें चूर्ण मिळवावें आणि ४०  
तोळे मध त्यांत घालून एकत्र करून ठेवावें. यांतील  
औषध नित्य ४ किंवा सहा मासे भक्षण केल्यानें सर्व  
प्रकारचे खोकले हटकून नाश पावतात. याचा गुण  
शेंकडा ८२ आहे.

## २४ उपदंशारीमलम.

मोहलाचें मेण, शेंदूर, व कांगेचा रस हीं तोळा तोळा घेऊन दहा तोळे गाईचे तुपां व कढवून दाट झाल्यावर उत्तर्गें. हें मलम लाविल्ल्यानं गर्मीचे चेट्टे, व्रण, नाडी-व्रण, हाडांत खिळलेला व्रण व कोणत्याही प्रकारची जखम त्वरित बरी होते. याचा गुण शेंकडा २० आहे.

## २५ गंगावनयोग.

गंगावन ही वनस्पती पाऊसकाळांत प्रत्येक गांवांत उत्पन्न होते. हिचीं पानें तंबाखूच्या पानासारखीं असून लहान असतात. पानाचा वाम फारच उग्रट येतो.

या वनस्पतीचा रस १ तोळा व तूप १ तोळा एकत्र मिश्रण करून ७ दिवस प्यावें. स्त्राणजे रक्ताची मृळव्याथ हटकुन दूर होते. मोडाची मृळव्याथ निःशेष बरी होत नाही. माधारण गुण येता. याचें प्रमाण शेंकडा ६० आहे.

गंगावनचा रस काढून तो अर्धशिशूी असलेल्या भागाम चोळावा व उन्हांत बसवें किंवा तो रस उलट बानूच्या नाकगुडीत ४ किंवा ५ थेंब टाकावा. स्त्राणजे तडाका लागून अर्धशिशूी दूर होते. याचा गुण शेंकडा २० आहे.

## २६ कूटजादिकाढा.

कूज्याची साल, आंब्याची साल, जांभळीची साल, अनिविप, बेरुफळ, वाळा, नागरमोथे, यांचा अष्टमांश काढा प्रत्येक वेळीं ३ तोळे प्रमाणें दिला असतां आम्हः

शूळ, रक्तातिमार, व फार दिवसांचे दुमरे अतिसार यांचा नाश होतो. रक्तातिसारावर याचा फारच उत्तम गुण आहे. प्रमाण शेंकडा २१ आहे.

### २७ रास्नादिकाढा.

रास्ना, एरंडमूळ, देवदार, वेवंड, मुंठ, धमासा, हरि-  
तकी, अतिविष, नागरमोथे, शतावरि, व अड्डक्या यांचा  
काढा मधे घालून द्यावा क्षणने आमवान, खोकला, कफ-  
वात, संधिगतवात, मज्जा, अग्नि व स्नायु यांनाळ वायु  
आणि सर्वांग वायु हे निश्चयाने दूर होतात. वायुगेगावर  
याचा गुण शेंकडा ९२ आहे.

### २८ पुनर्नवादि चूर्ण.

पुनर्नवा, देवदार, गुळवेळ, मुंठ, गोमरू, पहाडमूळ,  
हळद, दासहळद, पिंपळी, चित्रक, अड्डक्या, रिंगणी,  
डोरली या तेरा औषधांचे वस्त्रगाळ चूर्ण करून ते ४  
मासे प्रमाण दोन तांळे गोमूत्रांत मिळवून घ्यावे. क्षणने  
पुष्कळ दिवसांची सर्व अंगावरील मूत्र नारा पावते.  
वरील औषधांचा काढा करून गोमूत्र मिळवून घेतल्यासही  
गुण येतो. याचे प्रमाण शेंकडा ८२ आहे.

### २९ चंद्रप्रभा गुटी.

हळद, निंबाची पाने, पिंपळी, मिरे, वाढडिंग, नागर-  
मोथे, हिरण्णाची साल, हे निजस समभाग घेऊन वस्त्रगाळ  
चूर्ण करून बकरीच्या मूत्रांत तीन दिवस खलून गोक्या  
करून सुकवाव्या. या गोळीचे गोमूत्रांत घांसून अंजन  
करावे क्षणने तिमीररोगाचा नाश होतो. मात्र जन्म

शतांधळें जात नाही. पाण्यांत अंजन केलें असतां डोळ्यांतील कांच दूर होतो. मधांत अंजन केलें असतां डोळ्यांतील पटल दूर होतें. स्त्रीच्या दुधांत अंजन केलें असतां फुलांचा नाश होतो. याचें गुणाचें प्रमाण तिमिर ( शतांधळें ) शेंकडा ७२; कांचविंदु शेंकडा ८९; पटल शेंकडा २७; फुलें शेंकडा ९१.

### ३० पुष्टिकरण चूर्ण.

जेष्टमध, भुईकोहळा, दालचिनी, लवंग, गोमरु, गुळवेल, मफेदमुमळी, हीं सर्व औषधें समभाग घेउन चूर्ण करावें. तें चूर्ण निव्व ३ मासे प्रमाण अर्धा शेरा दुधाशीं घ्यावें. क्षणजे सदासर्वेच्छाळ पुरुषाचे अंगांत बल राहतें. शेंकडा गुण ९०.

### ३१ मधुयष्टि चूर्ण

जेष्टमध, गुळवेल, त्रिफळा, भुईकोहळा, मफेदमुमळी, शहामुमळी, नागकेशर, शतावरी, हीं सर्व समभाग घेउन वस्त्रगाळ चूर्ण करावें. नंतर तूप व मध विषम भागांत घेउन त्यांत हें चूर्ण ४ मासे मिळवून भक्षण करावें. दिवस २५. क्षणजे वृद्ध पुरुषही तरुण होतो. ( क्षणजे तद्वर्णाप्रमाणें वृद्ध पुरुषाच्या अंगांत रत्नामयी शक्ति उत्पन्न होतः ) याचा गुण शेंकडा ८५ आहे धातुक्षीणता व अशक्तपणा यांवर आश्वास उत्तम गुण दिमून आला. भुईकोहळा मात्र उत्तरा नक्षत्रांत काढलेला असावा.

### ३२ कामदेव मोदक.

मोसूरुं ४ तोळे, कवच बीज ८ तोळे, नागदळपूळ



( गंगेरनची साल ) ४ तोळे, शतावरी ४ तोळे, भुईकोहळा ८ तोळे, चिकणामूळ ८ तोळे, काकडीचे बीज ६ तोळे, आस्कंद १२ तोळे, दालचिनी, पत्री, वेलची, पिंपळी, आवळाकाठी, लवंग, नागकेशर, वंशलोचन, जटामांसि, काळी मुसळी, गुळवेल, रक्तचंदन ह्या सर्व औषधी प्रत्येकी १०।१० मासे घेऊन चूर्ण करावें. यास काटेसावरीच्या मुळीच्या रसाच्या २१ भावना द्याव्या. कुश आणि दर्भ यांच्या रसाच्या २१ भावना द्याव्या. नंतर समान साखर मिळवावी किंवा साखरेचा पाक करून त्यांत वरील जिनसा मिळवून एकजीव करून ठेवावा. हा पाक बलाबल पाहून १ तोळ्या पासून २ तोळे पर्यंत प्रत्येकवेळीं घ्यावा. ह्मणजे नष्ट शूक, मूत्रकृच्छ्र यांचा नाश होतो. पूर्ण वाजीकरण होतें. धातु पुष्ट होतें. याचा गुण शेंकडा ९८ आहे.

### ३३ नारसिंह चूर्ण.

शतावरी १ शेर, गोखरू १ शेर, दुग्धकंद १। शेर, गुळवेल सत्व १॥ शेर मिठावा चूर्ण २ शेर, चित्रकसाल २॥ पाव, काळे तीळ १ शेर, सुंठ, मिरें, पिंपळी यांचें चूर्ण -॥- शेर, साखर ४॥ शेर, मध २। शेर, गोघृत १ शेर -॥- पाव. यांचें चूर्ण करून राबळेच्या तुपाच्या मडक्यांत ठेवावें. दररोज २ तोळे चूर्ण खावून इच्छेप्रमाणें भोजन करावें. एक महिना सेवनानें जरा दूर होऊन रोगमुक्त होतो. शरीर बलिष्ठ होतें. उष्णता निघते, मेह, पांडु, प्रिनस, अष्टादश कुष्ठ, आठ उदररोग, भगंदर, मुत्रकृच्छ्र, गुग्गुली, हल्मिक, क्षय, महाश्वास, पांचप्रका-  
रचे स्त्रोकळे, ८० प्रकारचे वातरोग, ४० प्रकारचे पित्त-

रोग, २० प्रकारचे कफरोग, सन्निपात, सर्व प्रकारच्या मुळव्याधी, इत्यादि रोग याच्या प्रभावाने इंद्रवज्राप्रमाणे गुण देतात. सुवर्णामयान देहकांती होते. पराक्रम (विहाप्रमाणे) वाढतो. अश्वप्रमाणे वेगवान होता. शत-स्त्रियांशी रती करण्याचे सामर्थ्य, गृध्राप्रमाणे तीव्र दृष्टि, नृसिंहासमान पुत्र उत्पन्न होतो. हे नारमिहचूर्ण मनुष्याच्या सर्व रोगाचा नाश करिते. यापामून आस्रास आलेला गुणः—

मेह, पांडु, पित्त शेंकडा ३२. कुष्ठरोगांवर २१. उदररोग ५२; भगंदर ३५; मूत्रकृच्छ्र ७८; गृध्रसी गुण नाही. हलीमक ६८; क्षय ७४; महाश्वाम ३३; खोकले ४८; वातरोग ७७; सर्वच वातरोग बरे होत नाहीत; पित्तरोग ८८; कफरोग ६०; सन्निपात यावर गुण नाही. परंतु उबरावर ९८ गुण आला. मूळव्याधीवर २०; शरीरास तेज, बळ, शक्ति उत्तम येते. डोळ्यांस तेज येते. रती करण्याचे सामर्थ्य चांगले उत्पन्न होते. याप्रमाणे मन्त्रि चांगला गुण येतो. बरीच अतिशयोक्तीप्रमाणे आस्रास गुण दिसला नाही.

### १४ लशूनवटी.

लसूण ४०० तोळे, काळे तीळ १६ तोळे, हिंग, त्रिकटु, दोन क्षार, पंचलवणे, शोफ, कोष्ट, पिपळांमूळ, चित्रक, अनमोदा, ओवा, धणे ह्या मिनसा प्रत्येकी ४ तोळे घेऊन सर्वांचे चूर्ण करून तुपाच्या राबळेच्या मढक्यांत तोंड बांधून सोळा दिवस पर्यंत ठेवावे. नंतर त्यांत तिळाचे तेल शिंपवून ३२; तोळे कांजी मिळवावे.

व एक जीव करावा. यांतील औषध १ तोळा प्रमाण भक्षण करावें व वर पाणी प्यावें. क्षणजे आमवान, सर्वांग-वान, एकांग वात, अपस्मार, अग्निमांद्य, काम, श्वास, उदर, उन्माद, शूल इत्यादि विकार हटकून दूर होतात; याचा गुण शेंकडा आमवातावर ८७; सर्वांग वातावर ४२, एकांग वातावर गुण नाही. अपस्मार २३; कास, श्वास, उदर, शूल ७७

### ३५ आम्लपित्तनाशक पाक.

त्रिकटु, त्रिफळा, माका, जिरे, धणे, कोष्ट, अजमोदा, कटूजिरे, कायफळ, नागरमोथा, बेलची, जायफळ, जठा-मांभी, तेजपान, ताळीसपत्र, केशर, नागकेशर, ओवा, कचोरा, जेष्टमध, लवंग, रक्तचंदन, या सर्वांचे समभाग चूर्ण करून त्या चूर्णाबरोबर सुंटीचे चूर्ण, दुग्धपट खडी-साखर, व गाईचे दूध चौपट यांचा पाक करावा. त्यांतील एक तोळा प्रमाण गाईच्या दुधाबरोबर किंवा पाण्या बरो-बर भक्षण करावा. क्षणजे आम्लपित्त, अरुचि, शूल, ह-द्रोग, ओकारी, कंठांतीठ जळती, हृदयांतीठ दाह, मस्तक-शूल, अग्निमांद्य, पाठीचा शूल, कुलिशूल, वस्ति-शूल, गुदरोग, इत्यादि रोगांचा नाश होतो व वळ व पौष्टिकता वाढते. परंतु विशेष करून आम्लपित्त, मूत्र-कृच्छ, ज्वर, व भ्रम यांचा हटकून नाश होतो. याचे गु-णांचे प्रमाण आम्लपित्तावर शेंकडा ८३, मूत्रकृच्छावर ४६, ज्वर व भ्रमावर ९० व इतर रोगांवर ७७ आहे.

### ३६ गुग्गुळ पाक.

जवसार, देवदार, सैधव, नागरमोथा, विलायची, वे-

खंड, ओवा, मुंठ, मिरे, पिपळी, अजमोदा, हज्रद, त्रिक-  
टा, जिरे, कडुनिरे, वावडिंग, चित्रक ह्या जिनसा प्रत्येकी  
एक तोळा; यांचे सूक्ष्म चूर्ण करावे. नंतर त्यांत शुद्ध गु-  
ग्गुळ २० तोळे व खडी साखर २० तोळे व तूप २०  
तोळे (तापलेले) या सर्वांचा पाक करून ४ मास प्रमाण  
गोळ्या कराव्या. त्या गोळ्यांच्या भक्षणाने वातरक्त, उद-  
र, भगंदर, प्लीहा, यक्ष्मा, विषमज्वर, वीष, पांढरे तोंड,  
सर्व प्रकारचे व्रण, चित्तविभ्रम, अग्निमांद्य, गृध्रमी, अर्श,  
कोळ्यांतील रोग, ज्यादि रोगांचा शीघ्र नाश होतो. या-  
ज्वर स्वाप्यापिण्याचा काही निषेध नाही. याचे गुणाचे  
प्रमाण शेंकडा वातरक्तावर गुण नाही; उदर भगंदरावर  
३२, यक्ष्मा, विषमज्वर ७३, पांढरे तोंडावर गुण नाही;  
व्रणावर थोडाचहुन गुण येतो. चित्तविभ्रम, अग्निमांद्य,  
गृध्रमी, अर्श, कोळ्यांतील रोगांवर ८४, वातरोगांवर  
याचा विशेष उपयोग होतो. शेंकडा ९० गुण येतो.

### ३७ अगस्ति गुटिका.

हरितकी ४० तोळे, व कुचल्याच्या चिया ४० तोळे,  
ह्या वेहड्यांच्या काळ्यांत शिजवाव्या. आणि त्यांत मुंठ,  
मिरे, पिपळी, जववार, टांकणस्वार, ओवा अजमोदा, खु-  
रामनी ओवा, वावडिंग, हिंग, मधव, चिडळोण आणि  
वांगडस्वार प्रत्येक १२ तोळे या सर्वांचे चूर्णास त्रिवुरमांत  
खल करून लहान बोरान्वदी गोळी करावी आणि ध्या-  
वी क्षणजे शूल, गुल्म, कृमि, अग्निमांद्य, प्लीहा व आम-  
वात यांचा नाश होतो. याचा गुण वर लिहिलेल्या रोगां-  
वर शेंकडा ८९ आहे.

## ३८ मुस्तादि चूर्ण.

नागरमोथे, इंद्रजव, कोंवळे बेलफळ, लोध्र, मोचरस, आणि भायरीफूल, ही सहा औषधे समभाग घेऊन त्यांचे चूर्ण करून ते ताकांत गुळ मिळवून त्यांत मिसळून द्यावे. तेणेकरून सोर अतिसार दूर होनात. मात्र शोथातिसार, सन्निपातातिसार हे दूर होत नाहीत. याचा गुण शेंकडा ७८ आहे. रक्तातिसारावर मात्र ४२ गुण आला.

## ३९ अभयादि गुटिका.

हरीतकी, सेंधव बाह्याचा मगज, व कडू इंद्रावणाचा गीर ही सर्व एकत्र करून मर्दन करावी आणि लोखंडाच्या भांड्यांत भरून चुलीवर ठेऊन मंदाग्नीवर पचन करून लहान बोराएवढी गोळी करावी. ती गरम पाण्याशी दोप पाहून द्यावी. या गोळीने कोठ्यात सांचलेला आम ( आव ) झडतो. पथ्याला दहीभात द्यावा. याचा गुण शेंकडा ९९ आहे.

## ४० अनुवासन तैल.

गुळबेल, एरंडमूळ, करंजमाल, पारंगी, अडूळसा, रोहीपगवत, शतावरी, कोन्हाटामूळ, इंद्रावणमूळ, किंवा कावळी नांवाची वनस्पति ही नऊ औषधे चार चार तोळे, व जव, उडीद, आळशी, बोरीचे बीज, आणि कुळिथ ही आठ आठ तोळे, ही सर्व औषधे थोडी कुटून त्यांत पाणी १०० शेर ( ४० तोळे ३० शेर ) घालून चौथाई काढा करावा. त्यांत साडेसहा शेर तिळाचे तेल घालावे. आणि त्यांत आस्कंद ८ तोळे, भुईकोहळा ८ तोळे,

जेष्ठमध १२ तोळे, हरणवेल ४ तोळे, रानमूग ४ तोळे, रानउडीद ४ तोळे, बारीक वांटून चूर्ण करून त्या तेलांत घालून फिरून कढवावे. सर्व काढा आटून तेल राहिले छणजे ते तेल गाळून घ्यावे. हे तेल संपूर्ण वायूचे रोग दूर करिते. ज्वराचा नाश होतो; व शरीर-कांती उत्तम होते. याचा गुण फारच चमत्कारिक आहे. शेंकडा प्रमाण ९७ आहे.

### ४१ कूटजावलेह.

कुड्याची साल १०० तोळे घेऊन थोडी कुटून २५९ तोळे पाण्यांत टाकून चवथाई पाणी राहीपर्यंत काढा करावा. नंतर तो काढा गाळून त्यांत लाजेरी, धायटी-फूल, कोंबळें बेलफळ, पाहाडमूळ, मोतरम, नागरमोथे, अतिविष, हीं सात औषधें एक एक तोळा घेऊन चूर्ण करून त्या काढ्यांत टाकून फिरून कढवून पत्रीला लेप लागे असा वण करावा. हा लेह पाण्यांत अथवा शेतीच्या बुधांत किंवा मंडांत घेतला असतां त्यापामून नाना-तन्हेच्या रंगाचे वेदनायुक्त मोठे भगंकर असे अतिसार बंद होतात. स्त्रियांची सर्व प्रकारची धुवणी ( प्रदर ), संपूर्ण मुळव्याधी, प्रवाहिका, हे सारे रोग जातात. याच अवलेहांत आक्षी, अफू, केशर, मुरडरोग, नायफळ तोळा तोळा टाकून चण्याप्रमाणें गोळ्या करून वरील रोगांवर दिल्या त्यापामून मनोजोगा गुण आला. या गोळ्यांनीं मात्र मूळव्याध गेली नाही. वरील अवलेहाचें शेंकडा प्रमाणः— अतिसार शेंकडा ९४. धुवणी शेंकडा ७१.

मुठव्याध शेंकडा ६३; प्रवाहिका शेंकडा ८७; गोळ्या:-  
अतिसार शेंकडा ९८.

### ४२ पाठादि तैल.

पहाडमूळ, हळद, दारुहळद, मोरवेल, अभावी, शेव-  
म्याची साल, पिंपळी, जाईचा पाला, दांतीमूळ, हीं सात  
औषधे समभाग घेऊन त्यांचा कल्क करून त्याचे चौपट  
तिळांचें तेल घेऊन त्यांत तो कल्क मिळवून कल्काचा  
पाक होण्यासाठी तेलाले चौपट पाणी घालून तेल शेष  
राहीपर्यंत पाक करून तेल गाळून घ्यावें. हें तेल नाकांत  
घातलें असतां दुष्ट पिनसरोग जातो. याचा गुण शेंकडां  
६९ आहे.

### ४३ करंजबीजवार्ति.

करंजाचे बियांचें बारीक चूर्ण करून त्याला पळसा-  
च्या फुलांचा स्वरस काढून त्याच्या २१ भावना  
द्याव्या किंवा काढ्याच्या २१ भावना द्याव्या. चांगला  
खल वरून लांबोळ्या गोळ्या कराव्या. ती गोळी रेणुक  
बीजाइतकी पाण्यांत उगाळून अंजन करावें ह्मणजे  
डोळ्यांतील शुक्र, ( फूल ) मांसवृद्धि, वडस व भूर इत्यादि  
रोग शस्त्राने कापून काढल्याप्रमाणे झरून जातात. याचा  
गुण शेंकडा ६२ आहे.

### ४४ पुनर्नवादि योग.

पुनर्नवा ( पांढऱ्या वस्त्रें मूळ ) दुधांत उगाळून डोळ्यांत  
अंजन केलें असतां डोळ्यांची कंढू जाते, मधांत उगाळून  
अंजन केलें असतां डोळ्यांचा श्राव बंद होतो, तुपांत

उगाळून अंजन केलें असतां फुलें जातात, तेलांत उगाळून अंजन केलें असतां तिमिररोग जातो. कांजीत उगाळून अंजन केलें असतां रातांधळें जातें. पुनर्नव्याचा काढा करून त्यांत मध व बेलाचा रस मिळवून प्राशन केला असतां, सर्वप्रकारची आंगावरील सूज लवकर ओसरते. पुनर्नवा, देवदार, गुठ्वेल, पहाडमूळ, सुंठ, गोखरू, हळद, दारुहळद, रिंगणी, डोरली, पिंपळी, चित्रक, अडूळसा यांचें चूर्ण गोमुत्राबरोबर प्यावें. ह्मणजे बहुतप्रकारचा सर्वांग व्यापून राहिलेला शोथ ७ दिवसांत नाश पावतो. याचा गुण शेंकडा नेत्ररोगांवर ८७ आणि सुनेवर ९६ आहे.

### ४५ प्रमेहदर्पास्त्र गुटिका.

वंशलोचन, वेलदोज्यांतील दाणे, वावडिंग, नागकेशर, रेवाचिनी, दारुहळद, कंफोळ, पांढरा चंदन यांचें वस्त्रगाळ चूर्ण करून तें चंदनी तेलांत खलून बोरांतील आंठळीवढ्या गोळ्या कराव्या, सावलींत सुकवाव्या. एक गोळी पटसाच्या फुलांचा व दारुहळदीचा कषाय करून त्यांत खडीसाखर मिळवून त्याबरोबर गिळावी. या प्रमाणेंच अस्तमानी करावें ह्मणजे त्रिडिक एक दिवसांत बंद होते. रक्तप्रमेह, पूप्रमेह, आदीकरून सर्व परमे बरे होतात. याचा गुण शेंकडा ८९ आहे.

### ४६ अर्कामूळादि काढा.

रुईचें मूळ, पिंपळमूळ, शेवग्याची साल, देवदार, चवक, निर्गुडी, पिंपळी, रास्ना, माका, पुनर्नवा, चित्रक, वेसंड, चिराईत व सुंठ यांचा अष्टमांश काढा करावा.



तो सर्व त्रिदोषज्वर, सर्व सन्निपातज्वर, प्रसूतिवायु, बा-  
ळंतरोग, नाना प्रकारचें शैत्य व अपस्मार यांचा त्वरित  
नाश करितो. याचा गुण शेंकडा त्रिदोषावर ७७, सन्नि-  
पातावर ६१, प्रसूतिवायू व बाळंतरोगावर ८७, शैत्यावर  
९२, अपस्मारावर शेंकडा ४५ गुण आला.

### ४७ अष्टादशांग काढा.

चिरार्द्रित, देवदार, दशमुळें, सुंठ, नागरमोथे, कुटकी,  
इंद्रजव, धणे व गजपिंपळी यांचा अष्टमांश काढा करून  
दिल्यानें झांपड, बडबड, खोकला, अरुची, दाह, मोह,  
दमा यांनींयुक्त सर्व ज्वरांचा नाश करितो. याचा गुण  
शेंकडा ९८ आहे.

### ४८ वज्रक्षार.

पादेलोण, जवखार, मीठ, बांगडखार, सेंधव, टांकण-  
खार, व सज्जीखार हे समभाग एकत्र करून त्यांचें चूर्ण  
रुईच्या व निवडुंगाच्या चिकांत भिजवून तीन दिवस उन्हांत ठेवावें. नंतर त्याचा रुईच्या पानास लेप देऊन तीं  
पानें मडक्यांत भरून संधिलेप करावा व मातकापड करून  
मध्यम पूट द्यावें. स्वांगशीत झाल्यावर काढून चूर्ण करून  
त्यांत त्याचे निमे सुंठ, मिरी, पिंपळी, वावडिंग, मोहच्या,  
त्रिफळा, चवक, व भाजलेला हिंग मिळवावा. हा अग्नि  
व बल पाहून ताकाशीं द्यावा. ह्मणजे सर्व प्रकारचे उदर-  
रोग, सूज, गुल्म, अष्टिला, अग्निपांघ, अरुची, फीहा,  
यकृत यांचा हटकून नाश होतो. याचें घेण्याचें प्रमाण  
तीन माशांपासून आहे. याचा गुण शेंकडा ९० प्र. येतो.

## ४९ प्रमेहहारक गुटी.

भीमसेनी कापूर १ मासा, कस्तुरी १ मासा, अफू ४ मासे जायपत्री ४ मासे, या सर्वोचा नागवेलीच्या पानाच्या रसांत खल करावा. गुंज प्रमाण गोळी करावी. नित्य एक गोळी खडीसाखर व दूध यांचे बरोबर घ्यावी. ह्मणजे प्रमेह ( सर्व प्रकारचे ) दूर होतात. आणि वीर्यस्तंभन होतें. याचा गुण शेंकडा ८० आहे.

## ५० आर्द्रकायलेह.

जुनागूळ २० तोळे, आल्याचा रस ८० तोळे, या दोहीचें मिश्रण विस्तवावर हलक्या आंचेनें पक करावें. नंतर त्यांत दालचिनी, पत्री, नागकेशर, विलायची, लवंग, सुंठ, मिर्च, पिंपळी या जिनसा प्रत्येकी १ तोळा घेऊन त्यांचें बारीक चूर्ण करावें. तें वरील पाकांत मिळवून ठेवावें. तो अवलेह दररोज ६ मासे प्रमाण भक्षण करावा. ह्मणजे राजयक्ष्मा, मंदाग्नि, कास, श्वास. अरुची यांचा हटकून नाश होतो. याचें गुणाचें प्रमाण शेंकडा ८७ आहे. यांनें राजयक्ष्मा, निर्मुळ जात नाहीं. क्षयाचा खोकला व श्वास यांवर मात्र चांगला गुण येतो.

## ५१ खदिरसार गुटिका.

खैराची साल, जायफळ, भीमसेनी कापूर, दक्षिणी सुपारी, तज, पत्री, नागकेशर, विलायची, कस्तुरी ह्या जिनसा समभाग घेऊन खैरसालीच्या काढ्यांत खल करावा. चण्याप्रमाणें गोळी करावी. एक गोळी रात्री निजण्याचे वेळीं तोंडांत घेयावी. ह्मणजे जीभ, दांत, ओंठ,

मुख, गळा, ताळू इत्यादि ठिकाणचे रोग त्वरित नाश पावतात. याचा गुण शेंकडा ७० आहे.

### ५२ कांचनादि काढा.

कचनारचे सालीचा काढा करून त्यांत सुंठीचे सूर्ण घालून २१ दिवस प्यावा ह्मणजे गंडमाळेचा नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ८८ आहे. याच सालीच्या काढ्याने गंडमाळेच्या जखमा धुवाव्या आणि शेंकड्या.

### ५३ पटोलादि काढा.

कडु पडवळ, बेहडा, हिरडा, आवळकाठी, कडुनिंबाची साल, चिराईत, खैरसाल, बिबळा साल, बेलाची साल, यांचा अष्टमांश काढा करून त्यांत गुग्गुळू तीन मासे प्रमाणे मिळवून प्याला असतां ९ दिवसांत सर्व प्रकारचे उपदंश ( गर्मां ) रोग जातात. याचा गुण शेंकडा ९१ आहे. याजवर पथ्यः—तुरीचे वरण, पोळी, तूप बाकी वज्य.

### ५४ वचादि काढा.

वेखंड, अकलकारा, पिंपळाचे मूळ, मालकांगोणी, उंबराचे मूळ या औषधांचा अष्टमांश काढा करून तो काढ्या गाईच्या दुधांत किंवा मेंढीच्या दुधांत मिश्र करून घावा आणि नाकांत हत्तीच्या किंवा उंटाच्या मूत्राचे ९ थेंब सोडावे. ह्मणजे ७ दिवसांत हटकून अपस्मार, ( मिरगी, घुरे फेंफे ) या रोगाचा नाश होतो.

या विकाराचे आमचेकडे ३४ रोगी आले त्यांपैकी १३ निःशेष चांगले झाले. ९ साधारण बरे झाले आणि १ रोग्यांना गुण येऊन ९ महिन्यांनी पुनः रोगोद्भव

झाला. याच उपायानें त्यांचा रोग गेला, याचा शेंकडा गुण ६४ आहे.

### ५५ क्षारपंचक.

तीळ, आषाडा, केळें, पळस, व जव यांचा क्षार काढून तो प्रत्येकी १।२ गुंजा घेऊन, मोखरू, पांढरा वसू, जेष्टमध, पाषाणभेद, ( घनफोड ) पळसाचीं फुलें यांचा काढा करून तो काढा २ तोळे यांत वरील क्षार मिळवावें. आणि प्राशन करावें क्षणजे मूतखडा, उन्हाळी, मूत्र बंद होणें, मूत्र शर्करा, शुक्राश्मरी यांचा हटकून नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ८७ आहे.

### ५६ पपईयोग.

एरंडपपईचें मूळ ४ तोळे काढून रात्री ८ तोळे पाण्यांत मिजत घालावें. प्रातःकाळीं त्याच पाण्यांत वांटून वखगाळ करून त्यांत जवखार १ मासा मिळवून प्राशन करावें क्षणजे ७ दिवसांत मूत्राश्मरी ( मूतखडा ) झरून पडतो. याचा गुण शेंकडा ६८ आहे.

### ५७ मुखपाकहरणचूर्ण.

जेष्टमध, रक्तचंदन, वाळा, अतिविष, दुर्वा, पांढरा सुवासिक चंदन, देवदार, वंशलोचन, कंकोळ आणि त्रास-कायूर, प्रत्येकी अर्धा अर्धा तोळा घेऊन त्यांचें बारीक चूर्ण करून ठेवावें. हें चूर्ण आणि समभाग मध मिळवून तें मिश्रण जिभेस व तोंडास लावावें क्षणजे जिभेवरील, घशांतील, व तोंडांतील ठिकठिकाणीं पडलेले चंद्र, चिरा आणि तोंडांतील सर्व प्रकारचे उष्णतेचे रोग क्षणजे

ज्यांच्या योगानें, खानें, पिणें, बोलणें, गिळणें हें बराबर होत नाही अशा अनेक प्रकारच्या मुखरोगांचा तीन किंवा पांच दिवसांत हटकून नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ९९ आहे.

### ५८ कामदेव चूर्ण.

सफेद मुसळी, गुळवेलीचें सत्व, कवचबीज, गोखरूं, सावरीचीं मुळें, खडीसाखर, आवळकाठी, पंजाबी सालम, मदनमस्त, आस्कंद यांचें चूर्ण करून तें १० मासेप्रमाण गाईचे दुधांत तूप व खडीसाखर हें चूर्ण घालून प्यावें ह्मणजे नवीन शूक्रधातु उत्पन्न होते व संभोगाची इच्छा वाढते. ७ दिवसांत पूर्ण गुण अनुभवास येतो. याचा गुण शेंकडा ९९ आहे.

### ५९ अश्वत्थयोग.

पिंपळाच्या पानांच्या अग्रांचा रस १ भाग, रक्तचा-बोळ ६ भाग, आणि मध १४ भाग एकत्र करून तो तीन माशांपासून ६ मासेपर्यंत पोटांत द्यावा. ह्मणजे वांतीतन रक्त जात असलेलें किंवा हृदयांत सांचलेलें रक्त दूर होतें. याचा गुण शेंकडा ८९ आहे.

### ६० अष्टांग तैल.

काड्या निवडूंग, एरंड, बक्राणनिंब, निर्गुडी, मुंगना (शेबणा) कचोरा, काळा धोत्रा, काळी टाहकळ यांच्या पानांचा रस काढून त्यांत चौथाई तिळाचें तेल टाकून पक्क करावें. नंतर त्यांत सुंठ टाकावी. सर्व रस जळाल्यावर तेल शिळक राहिलें ह्मणजे उतरावें व गाळून ठेवावें.

या तेलाचें मर्दन केल्यानें सर्व प्रकारचे वायूरोग नाश पावतात. याचा गुण शेंकडा ८८ आहे.

### ६१ वृद्धविंतामणी चूर्ण.

खुरासनी ओंवा, सफेद जिरे, अजमोटा, काकडसिंगी, आस्फंद ह्या जिनसा समभाग घेऊन वस्त्राळ चूर्ण करावे. तें भस्म एक मासा प्रमाण पाण्याशीं ध्यावें ह्मणजे सर्वा प्रकारचे वायू, श्वास, खोकला, प्रलाम, अतिनिद्रा, अरुचि इत्यादि विकार हटकून दूर होताना याचा गुण शेंकडा ६९ आहे.

### ६२ आमवातारि गुटिका.

मोठ्या हिगड्याच्या फळावरील साल, सेंधेमीठ, निशोतर, इंद्रावणाची मुळी, सुंठ, इंद्रावणाच्या फळांतील गीर, यांचें बारीक चूर्ण करून तें चूर्ण लोवेंडाच्या कढईत टाकून त्याच्या १६ पट पाणी त्यांत घालून ती कढई अग्नीवर ठेवावी. पाणी आटल्यावर त्या चूर्णाच्या लहान बोर्या प्रमाणें गोळ्या कराव्या. त्यापैकीं एक गोळी गरम पाण्याशीं ध्यावी. आणि वर तूप जास्त घालून अशा भाताचें भोजन करावें ह्मणजे आमवाताचा हटकून नाश होतो, ( तूपनात न खान्यास अतिशय जुळव होताना ते तूर खाल्यानें बंद होतात. ) याचा गुण शेंकडा ९९ आहे.

### ६३ अहिफेनयोग.

जायफळ कोरून त्यांत अफु घालून तें जायफळ वडाच्या किंवा बाभळीच्या साडास भाक पाडून त्यांत ठेवावें. त्यावर त्याच लाकडाचा चुरा बसवावा. वर चिख

ल वगैरे बावावा. १५ दिवसांनीं तें जायफळ काढून अकू सद्धां त्याचा उंवराचे दुधांत खल करावा व गुंज प्रमाण गोळ्या कराव्या. एक गोळी भक्षण करून वर खडीसाखर-युक्त आटीव दध प्राशन करावें ह्मणजे धातूचा स्तंभ होतो. उतार निव्वू चोखावें. याचा गुण शेंकडा ९५ आहे.

### ६४ ज्वालानलरस.

जवखार, सज्जीखार शुद्ध टांकणखार, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, पिंपळी, पिंपळमूळ, चवक, चित्रक, मुंड, ह्या सर्व जिनसा समभाग आणि या सर्वांवरावर भाजलेली भांग आणि भांगेच्या अर्धा भाग शेवगामूळ घेऊन चूर्ण एकत्र कावें त्यास भांगेच्या रसांत, शेवग्याच्या रसांत, चित्रकाच्या रसांत ( फळ्यांत ) एक एक दिवस खल करून उन्हांत सुकवावें. त्या चूर्णास एका कोऱ्या मडक्यांत ठेवून मुख बंद करून कापडमात करावें, आणि आग्ने द्यावा ( गजपूट ); नंतर काढून त्यास आल्याच्या रसाचीं ७ पुंटे द्यावी व गुंजप्रमाण गोळ्या कराव्या. त्या पैकीं १ किंवा २ गोळ्या मधांत उगाळून घ्याव्या व वर गुळ्यांचा काढा करून घ्यावा. ह्मणजे तात्काळ सर्व अजीर्णाचा नाश होतो. विषूची, अतिसार, संग्रहणी, कफरोग, ओकारी, अरुचि इत्यादि विकार नाश पावतात. व क्षुधा प्रदीप्त होते. याचा गुण शेंकडा अजीर्णावर ९८, विषूची ७२, अतिसार ७८, संग्रहणी ६१, कफरोग ७८, ओकारी ९०, अरुचि ९८, क्षुधा प्रदीप्त ९८ याप्रमाणें आहे.

### ६५ काविळनस्य.

कडू दोडकीच्या वाळल्या फळाचें किंवा देवडांगरीच्या

वाळल्या फळांचें चूर्ण वस्त्रगाळ करून तें नाकांत ओढावें ह्मणजे कावीळ रोगाचा एक दिवसांत निश्चयानें नाश होतो. नाकांतून पिवळा श्राव नसल्याच्या योगानें वाहतो तो तूप गरम करून नाकांत सोडल्यानें बंद होतो. याचा गुण शेंकडा २१ आहे.

### ६६ शंखवटी.

मोठा शंख फोडून त्याचे तुकडे करून एका कोऱ्या मडक्यांत घालून त्यांत निंबाचा रस तुकडे बुडें इतका टाकावा. नंतर मुख बंद करून मातकापड करावें आणि हलकें पूट द्यावें. याप्रमाणें २१ वेळ करावें ह्मणजे त्याचे शूभ्र भस्म होतें या भस्मांत चिंचेचा क्षार ६ मासे, काचलवण, ४ मासे, बीडलवण ४ मासे, सुंठ ६ मासे, निरी ६ मासे, पिंपळी ६ मासे, भाजलेला हिंग ४ मासे, शुद्ध बचनाग १) तोळा, गंधक ४ मासे, पारा हिंगुळांतील ४ मासे, यांचें पारा व गंधक खेरीज करून चूर्ण करावें. नंतर पारा व गंधक यांची कज्जली करून त्यांत वरील सर्व जिनसा मिळवून आल्याच्या रसांत वाल प्रमाण गोळ्या बांधाव्या. एक गोळी लंगेच्या काळ्याबरोबर घेतली असतां तात्काळ शुद्धाचा नाश होतो. अजीर्ण, अग्निमांद्य, विपूचिका, पान्थरी, यकृत यांचाही नाश होतो याचा गुण शेंकडा ९४.

### ६७ बिभीतक वृक्षयोग.

बेहड्याच्या वृक्षाची साल आणून ती सालींत वाळवावी. त्या सालींचें चूर्ण ( सूक्ष्म ) करावें. तें एक तोळा चूर्ण गाईच्या दुधांत, तुपांत, गुळाबरोबर किंवा पाण्यांत



प्याल्ल्याने हद्दोग, जीर्णज्वर, रक्तपित्त यांचा हटकून नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ९३ आहे.

### ६८ गोक्षुरादि गुग्गुल.

चौदा तोळे गोखरूचा १९१ तोळे पाण्यांत अष्टमांश काढा करावा. त्यांत १॥ तोळे गुग्गुळ टाकून तो पक्क करावा. नंतर त्यांत सुंठ ४ मासे, मिरे ४ मासे, पिंपळी ४ मासे, हिरड्याची साल ४ मासे, बेहड्याची साल ४ मासे, आवळकटी ४ मासे, नागरमोथे ४ मासे, सर्वांचे चूर्ण त्यांत टाकून त्याचा एकजीव करावा. नंतर ९ मासे प्रत्येक दिवशी पाण्याबरोबर घ्यावा. ह्मणजे मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, परमा, प्रदर, वातरक्त, वीर्यदोष, यांचा नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ७८ आहे.

### ६९ षडबिंदुतैल.

एरंडमूळ, तगर, सोंफ, हरणवेळ, सेंधेमीठ, राम्ना, माका, वावडिंग, जेष्टमध, सुंठ, ह्या जिनसा समभाग यांच्या ८ पट तिळाचे तेल, चौपट माक्याचा रस, आणि तेलाच्या चौपट बकरीचे दूध या सर्वांस एकत्र करून कढईत मंद आंचेने पक्क करावे. पाणी जळल्यावर (रस वारे) तेल शेष राहिले ह्मणजे गाळून शिशीत भरून ठेवावे. या तेलाचे ६ बुंद निजतेसमयीं नाकांत घालावे. ह्मणजे सर्व प्रकारचे मस्तक रोग, आणि सर्व दंतरोग यांचा नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ७९ आहे.

### ७० रोपणी गुटिका.

तिळाचीं फुले ८०, पिंपळाचीं फळे १०, चमेलीचीं

फुलें ९०, मिर्चें १६ यांचें बारीक चूर्ण करून तें फळा-  
साच्या फुलांच्या रसांत बोटून गोळ्या कराव्या. एक  
गोळी पाण्यांत उगाळून अंजन करावें. ह्मणजे तिमिर,  
अर्जुनरोग, फुलें, मांसवृद्धि, लाली, भूर, खुपच्या, यांचा  
नाश होतो. याचा गुण शेंकडा तिमिररोगांवर ८०,  
अर्जुन (अधिरा) रोगावर ९९, फुलांवर १९, मांसवृद्धी-  
वर ९९, लाली वगैरेवर ९९ आहे.

### ७१ द्वादशामृत हरीतकी.

हिरडा १ तोळा, बेहडा २ तोळे, आवळकाठी ४  
तोळे, शतावरी १ तोळा, जेष्टमध ८ मासे, तज ८ मासे,  
सेधेमीठ, १। तोळा, पिंपळामूठ १। तोळा, खडीमाखर  
१२ तोळे यांचें सूक्ष्म चूर्ण करून तें ८ मासे प्रमाण तूप  
व मध विषम भागानें घेऊन ४९ दिवस सार्वे ह्मणजे  
तिमिर, पटल, कांच, राताधळें, फुलें. नेत्रांतील पाण्याची  
गळती, सबल वायु इत्यादि सर्व नेत्ररोग दूर होतात.  
याचा गुण शेंकडा ६६ आहे. या प्रमाणानेंच जास्त चूर्ण  
करून ठेवावें.

### ७२ बिल्बक तैल.

शिरसाचें १६ तोळे तेल घेऊन त्यांत मुंठ, मिर्च, पिं-  
पळी, कोष्ट, पिंपळामूठ, आवाळ्याचा क्षार, जवखार,  
बेलाच्या मुळीचा रस, गोमूत्र, ( यात सुंजपासून बबळारापर्यंत  
जिनसा ४।४ मसे प्रमाणे घ्याव्या ) बेलाच्या मुळीचा रस व  
गोमूत्र प्रत्येक ८ तोळे घ्यावें. सर्व जिनसा हलक्या आने-  
ने पक कराय्या. तेल राहिलें ह्मणजे गाळून ठेवावें. हें  
तेल कानांत टाकल्यानें बहिरेपणा, कानांतील शब्द, कान

बाह्ये, कर्णशूल इत्यादि रोगांचा नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ९२ आहे.

### ७३ औदुम्बरफलयोग.

उंबराचीं फळे आणून सावलींत सुकवावीं. त्यांचें वस्त्रगाळ चूर्ण करून तें चार मासे प्रमाण मध व खडीसाखर मिळवून घ्यावें. क्षणजे ७ दिवसांत स्त्रियांचा धूपणी (प्रदर) रोग जातो. याचा गुण शेंकडा ६८ आहे.

### ७४ विजयसारयोग.

अर्जुमवृक्षाची साल, वेखंड, मालकामोणी, राई (शिरस) यांचें चूर्ण वस्त्रगाळ करून तें ४ मासे प्रमाण धड पाण्यांत किंवा शिळ्या पाण्यांत प्यावें क्षणजे पांच दिवसांत स्त्रियांना ऋतु प्राप्त होतो. विटाळ गेला तरी पुनः उत्पन्न होतो. आणि स्त्रियांचा वांझपणा जातो. या औषधाच्या चूर्णावर आढी काळे तीळ आणि गुळ यांचा काढा दिला त्यापासून आढांस शेंकडा ९६ गुण दृष्टीस पडला. नुस्तें चूर्ण मात्र दिळें नाहीं.

### ७५ कामेश्वर गुटी.

केंशर ४ मासे, लवंग ८ मासे, जायफळ १ तोळा, अफू ११ मासे, कस्तुरी २ गुंजा यांचें बारीक चूर्ण करून मधांत खल करवा. दोन गुंज प्रमाण गोळी बांधावी. सायंकाळीं गोळी भक्षण करून वर आटीव दूध प्यावें. क्षणजे काम प्रदीप्त होतो. धातूचा स्तंभ होतो. पुरुषांस व स्त्रियांस आनंद होतो. याजवर उतार निंबू चोखावें. याचें प्रमाण शेंकडा ९० आहे.

### ७६ विदारीकंदपाक.

भुईकोहळ्याचें चूर्ण २० तोळे तुपांत तळावें. बदाम मगज ४ तोळे, बेदाणा ४ तोळे, लवंग ४ तोळे, बेलची ४ तोळे, जायफळ ४ तोळे, गोखरू ४ तोळे, कवन बी ४ तोळे, सफेदमुसळी ४ तोळे, शहामुसळी ४ तोळे, पंजाबी ४ तोळे, लसणी सालम ४ तोळे, यांचे बारीक चूर्ण करून चूर्णाच्या चौपट साखरेचा पाक करून त्यांत वरील चूर्ण मिळवून बड्या कराव्या. त्या शक्तिप्रमाणें सेवन करून वर गाईचें दूध प्राशन करावें. प्रमाण २ तोळ्यांपासून ४ तोळेपर्यंत ध्यावें. यानें पौष्टिकता उत्पन्न होते. बल वाढतें. धातू वाढून ती घट्ट होते. पुरुषत्व प्राप्त होतें व वाजीकरण होतें. याचा गुण शेंकडा ९४ आहे.

### ७७ तुळसीयोग.

काळ्या तुळशीच्या पानांचा अंगरस २ तोळे काढून त्यांत तीन मासे मध मिळवून द्यावा. ह्मणजे तिजारे चैथ्यरे आदि सर्व विषमज्वर तीन दिवसांत नाश पावतात. याचा गुण शेंकडा ७१ आहे.

### ७८ अर्जुनवृक्षयोग.

अर्जुन वृक्षाचीं झाडे फार मोठीं असतात. त्यांस कांहीं ठिकाणीं अंजन किंवा आंजन ह्मणतात.

१ याचे सालीचें चूर्ण मधांत दिल्यानें हृद्रोग, रक्त-पित्त, व जीर्णज्वर यांचा नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ८९ आहे.

२ सालीचा अष्टमांश काढा करून तो दुधांत मिळवून

ते दूध खिरीसारसो आटवून प्राशन करावें. पित्त व हृद्रोग यांचा नाश होतो. याचा गुण शेंकडा पित्तावर ९८ व हृद्रोगावर ६९ आहे.

३ याचे सालीचा रस १ तोळा व तूप १ तोळा दोन्ही मिळवून तीन दिवस प्यावे. ह्मणजे हृद्रोगा-संबंधी असाध्य ह्मणण दूर होते. याचा गुण शेंकडा ९९ आहे.

### ७९ अपामार्गयोग.

ही झाडे पाऊमकाळांत सर्व देशांत उत्पन्न होतात त्यांम आघाडा असें ह्मणतात. ही फार उपयुक्त वन-स्पति आहे.

विंचूचे दंशावर मुळी उगाळून लेप द्यावा व लेप सुकेपर्यंत शेकावें. ह्मणजे विंचूचे विष उतरतें. याचा गुण शेंकडा ७० आहे.

२ कुत्र्याचे विषास याचे एक तोळा मूळ कुटून मधार्शी द्यावे. आणि कोरफडीचे पान व सेंधव दंशावर बांधावे ह्मणजे तीन दिवसांत विष उतरतें. याचा गुण शेंकडा ४२ आहे.

३ आघाड्याच्या क्षाराचे पाणी व पानांचा कल्क यांत तिळाचे तेल सिद्ध करावें. ते गाळून कानांत घालावे ह्मणजे कर्णनाद व बधिरत्व हे विकार जातात. याचा गुण शेंकडा ८४ आहे.

४ आघाड्याचे मूळ मधांत उगाळून भंजन करावें. ह्मणजे डोळ्यांतील फूल सडतें. गुण शेंकडा ७८ आहे.

५ आघाड्याच्या पंचांगाची जाळून राख करावी. ती

मधांत १ किंवा २ वाळ द्यावी. कफाचा नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ९० आहे.

६ आघाड्याची मुळी ताकांत उगाळून घ्यावी. क्षणजे काशीळीचा ३ दिवसांत नाश होतो. गुण शेंकडा ९९.

७ याचें झाड उपटून मुळी कापून फेंकून द्यावी. नंतर झाडाचा रस काढून तो रस ४ तोळे, जिण्याची पूड नऊ मासे, घालून घ्यावा. क्षणजे ७ दिवसांत उपदंशाचा नाश होतो. उतार बोरीच्या किंवा जास्वंदीच्या पार्याचा रस द्यावा क्षणजे आग शमन होते. गुण शेंकडा ८०.

८ याची ४।५ पानें विड्यांत खावी. क्षणजे पोटासूळ शमन होतो. गुण शेंकडा ९१ आहे.

### ८० अडूळसायोग.

हीं झाडे बहुतेक देशांत उत्पन्न होतात. हें झाड मोठें असतें. त्यास पांढरीं फुलें येतात.

१ पानांचा फुलांसहित रस काढून तो रस दोन तोळे व मध ६ मासे एकत्र करून घ्यावा क्षणजे श्वास, कास, कफ क्षय यांजवर उत्तम गुण येतो. याचें प्रमाण शेंकडा ८० आहे.

( १ ) पानाचा रस आणि मध समभाग प्राशन करावा क्षणजे रक्तपित्ताचा नाश होतो. गुण शेंकडा ७९.

( २ ) याचे मुळीचा रस काढून ६ मासे देणें क्षणजे श्वेत प्रदर, सोमरोग यांचा नाश होतो. गुण शेंकडा ६०.

( ४ ) अडूळसा, नागरमोषे, धमासा, सुंठ, भारंग-मूळ यांचा काढा द्यावा क्षणजे कफज्वराचा नाश होतो. गुण शेंकडा ९१.

## ८१ एरंडवृक्षयोग.

एरंडाचे वृक्ष प्रसिद्ध आहेत. हे बागांत लावतात.

( १ ) एरंडमुळाचा काढा, हिंग १ मासा व पादे-  
लोण एक मासा घालून द्यावा. ह्मणजे शूळांचा नाश होतो  
याचा गुण शेंकडा ९९ आहे.

( २ ) एरंडाचे पानास लोणी अगर साजूक तूप ला-  
वून तें मस्तकावर बांधावें. ह्मणजे मस्तकांतील उष्णता  
निघते. याचा गुण शेंकडा ९८ आहे.

( ३ ) लाल एरंडाचा चीक डोळ्यांत घातल्यानें सारा  
व फुलें झडतात. याचा गुण शेंकडा ८४ आहे.

( ४ ) एरंडमूळ तुपांत उगाळून प्राशन करावें. व  
योनीस लेप याचाच द्यावा ह्मणजे स्त्री मुखानें प्रसूत होते.  
याचा शेंकडा ७२ गुण आहे.

## ८२ मालिनीवसंत.

घोड्याचे मूत्रांत कलखापरीचें चूर्ण २१ दिवस घालून  
ठेवावें. आणि उन्हांत ठेवून सुकवाचें. नंतर तें चूर्ण ८  
तोळे व पांढऱ्या मिऱ्याचें चूर्ण ४ तोळे, व हिंगुळ ८  
तोळे या सर्वांचे एकत्र चूर्ण करून त्यांत गाईचें लोणी  
दोन तोळे घालून खळावें. नंतर १०० निंबाचे रसांत खल  
करावा. मात्रा १ बाल प्रमाण करून मध ३ मासे व पिंपळीचें  
चूर्ण एक मासा यांत द्यावी. ह्मणजे संग्रहणी, अतिसार,  
ज्वर, क्षय, मूळव्याध, ताप, शूळ, अभिमांघ, वातवि-  
कार, मदर, रक्तमूळन्याध, विषमज्वर व नेत्ररोग, यांचा  
नाश होतो. याचा गुण शेंकडा संग्रहणीवर ७४ अति-  
सारावर ८२. ज्वरावर ९८, क्षयावर ९९, मूळव्याधीवर

३८, विषमज्वरावर ६६, शूळावर ७८, अभिमांद्यावर ९८, प्रदरावर ७९. नेत्ररोगांवर ९२.

### ८३ आम्रवृक्षयोग.

आंब्याचीं झाडे सर्वत्र प्रसिद्ध आहेत.

( १ ) रक्ती मुळव्याध व प्रदर यांवर आंब्याच्या कोईचे चूर्ण मधांतून द्यावे. ४ मासे चूर्ण व ६ मासे मध या प्रमाणें. याचा गुण शेंकडा ८९ आहे.

( २ ) आंब्याची अंतरमाल दह्यांत वांटून १ तोळा पर्यंत द्यावी. ह्मणजे दहा व अतिसार यांचा नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ७४ आहे.

( ३ ) आंब्याच्या चिकापासून राळ होतें तिचें ४ मासे चूर्ण साखर व तूप यांत द्यावे. याचा गुण शें. ९०.

( ४ ) सर्व प्रकारच्या उष्णतेवर आंब्याची अंतर साल, उंबराच्या मुठांवरील साल व वडाच्या पारंब्यांचा रस काढून त्यांत जिरें व खडीसाखर घालून द्यावे. गुण शेंकडा ८९.

### ८४ सांबरशिग.

शिताफळीचा पाला बारीक वांटून त्याचा लांबट गोळा करून त्यांत सांबरशिगाचा तुकडा मध्यभागी ठेवावा. आणि त्यास रानशेगांचें पुट द्यावे. ह्मणजे त्याचें भस्म होतें. याचप्रमाणें टाकळीच्या पार्यांतही भस्म होतें.

( १ ) हें अर्धा मासा भस्म एक तोळा तुपाशी द्यावे. ह्मणजे वातशूल शमतो. याचा गुण शेंकडा ८० आहे.

( २ ) हें भस्म १ मासा प्रमाण दुधांतून द्यावे. ह्मणजे धातुवृद्धि होऊन धातुस्थानची कडकी निवृत्त जाते.



( ३ ) हे भस्म १ वाल मधांत दिल्याने खोकला, दमा, क्षय, ग्रंथी, अपची व अंडवृद्धी यांचा नाश होतो. याचा गुण खोकला, शेंकडा ९०, दमा शेंकडा ६०; क्षय शेंकडा ४०; ग्रंथी व अपचीवर गुण आला नाही. अंडवृद्धी शेंकडा ३० आहे.

### ८५ कृमिहारक गुटी.

वावडिंग, पळसपापडी, कपीला, डिकेमाली, किरमानी ओवा, सितपाचा पाला, नायीचा पाला, गिंजानचा पाला हे सर्व समभाग घेऊन त्यांचा खल करावा. गुंज प्रमाण गोळी करून ती वावडिंगाचे काढ्यांत घ्यावी. कृमीचा नाश होतो, ज्वर, ओकारी, झांपड, हगवग, यांचाही नाश होतो याचा गुण शेंकडा ९८ आहे.

### ८६ गंधाररस.

नागरमोथे, मोचरस, लोध्र, धायटीफल, ब्रेलांतील गीर, इंद्रजव, आफू, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सर्व जिनसा समभाग घ्याव्या. प्रथम पारा व गंधक यांची कज्जली करावी. नंतर सर्व औषधी बारीक चूर्ण करून मिळवाव्या व खलांत सूक्ष्म होईपर्यंत घोटावे. ते तीन गुंजा औषध ताकांत घावे. ह्मणजे अतिसार, संग्रहणी इत्यादि विकार दूर होतात. गुण शेंकडा ९२ आहे.

### ८७ शुद्धमोचरस.

सुंठ १ भाग, मिरे २ भाग, पिंपळी ३ भाग, सेवे-लोण ४ भाग, शुद्ध गंधक ५ भाग, या सर्वांचे चूर्ण करून निंबूचे रसांत १० दिवस कळ करून गुंम प्रमाण

गोळ्या कराव्या. यांतील एक गोळी प्रति दिवशी भक्षण केली असतां क्षुधा उत्पन्न होते व वाढते. गुग शेंकडा ९९

### ८८ चंदनादि काढा.

पांढरा चंदन, पित्तपापडा, वाळा, कनळगड्डा किंवा कमळकाकडी, धणे, सोंफ, आवळकाटी ह्या सर्व जिनसा समभाग घेऊन साधारण चूर्ण करावें. त्यांतील एक तोळा चूर्ण घेऊन १६ तोळे पाणी घालून २ तोळे उरवावें. त्यांत मध तीन मासे व खडीसाखर ६ मासे मिळवून घ्यावी. ह्मणजे दाह त्वरित दूर होतो. याचा गुण शेंकडा ९० आहे.

### ८९ खर्पर गुठी.

शुद्ध कलखारी १ तोळा, हिराकम ३ माने, मोरचून दोन वाल, शिलाजित १ मामा ह्या जिनसा ११ लिंबांच्या रमांत खळून हरवण्या एवढी गोळी करावी. ती तुपांत मिळवून खावी, ह्मणजे उग्रदंश (गर्म वा) नाश होतो. पथ्य-फ ह्मणजे खिचडी व तूप बाकी सर्व पदार्थ वर्ज्य. याचा गुण शेंकडा ९२ आहे.

### ९० मारुंडेय चूर्ण.

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध हिंगूळ, शुद्ध टांकण-खार, सुंठ, भिरें, पिंपळी, जायफळ, लवंग, तेजपान, एलची, चित्रक, नागरमोथे, गजपिंपळी, तगर, अभ्रकमस, धायटीफूळ, अतिवीष, शेवग्याचें बीज, काटेसावरीचीं मुळे, अफू. या सर्व जिनसा समभाग घेऊन बारीक चूर्ण करावें. प्रति दिवशी एक मासा प्रमाण साखरेशी

भक्षण करावें, ह्मणजे संग्रहणी, अभिमांघ, यांचा नाश होतो धातुवृद्धि, वयवृद्धि, बळ आणि पुष्टी ( शरीर पुष्ट ) उत्पन्न होते. याचा गुण शेंकडा ९४ आहे.

### ९१ क्षारयोग.

तीळ, आवाडा, पळस, आवळी यांचें मूळ तोडून झाडें आणून तीं वाळवावीं. तीं जाळून त्यांचें भस्म करावें. तें भस्म पाण्यांत मिळवून तें पाणी वस्त्रानें गाळावें. गाळलेलें पाणी कढईत घालून खालीं अग्नि लावावा. पाणी आटलें ह्मणजे बुडास क्षार जमतो तो दोन गुंजा प्रमाण शेळीच्या मूत्रात द्यावा ह्मणजे मूत्रशर्करा ( खर ) आणि अश्मरी ( मूतबद्धा ) यांचा नाश होतो. गुण शेंकडा ८४.

### ९२ व्रणराक्षस तैल.

सोळा तोळे सिरसाचें तेल व आठ तोळे गाईचें तूप एकत्र करावें. त्यांत आठ तोळे काळ्या माक्याचा रस व ४ तोळे एरंडपत्राचा रस मिळवावा. त्या सर्व जिनसां अग्निर रस आटेपर्यंत पचन कराव्या. नंतर तेल गाळून त्यांत गंधक ५ मासे, शेंदूर ५ मासे, हरताळ ५ मासे. मनशीळ ५ मासे, वळद ५ मासे, गेरू ५ मासे, पारा व गंधक यांची कज्जली ५ मासे एकत्र करून पुनः तें तेल कढवावें. पाक झाल्यावर उतरून ठेवावें. याच्या मर्दनानें कंडू, विचर्चिका, खरूज, कुष्ठ, वातरक्त, सर्व प्रकारचे व्रण, विस्फोट, दड्ड, पांढरें कोड यांचा हटकून नाश होतो. याचा गुण शेंकडा ६९ आहे.

### ९३ कल्याणसुंदराभ्र.

वज्राभ्रकाचें भस्म ४ तोळे घेऊन त्यास आवळी, नागरमोथा, रिंगणी, शतावरी, ऊंस, बेल, टाकळा, सुगंव-वाळा, अड्डळासा, डोरली, सोनपडवळ, पाहाडमूळ, बेहडा यांच्या रसांत पृथक् खळ करावा. ( प्रत्येक वनसातीचा रस ४ तोळे घ्यावा. ) नंतर गुंज प्रमाण गोळ्या कराव्या. त्या अनुपानपरत्वे सर्व रोगांवर द्याव्या. ह्मणजे राजपक्षा, धातुक्षय, शोष, कफ, पित्त, श्वास वाय, अरुचि, काप, शरीरशैथिल्य, सन, स्वरक्षय, अजीर्ण, उदरद, शूल, प्रमेह, ज्वर, विष, उरोग्रह, पांडू, उबकी, कृशत्व, कृमि, बलनाश, आम्लपित्त, प्लीहा, आमय, हलीमक, रक्तगुल्म, तृष्णा, आमवात ग्रहणी विस्फोट, कुष्ठ, ( कांड ) नेत्ररोग, शिरोरोग, मूर्च्छा, ओकारी, विरसपणा यांचा लवकर नाश होतो हें औषध बल देणारें, धातुवर्धक, बुद्धिवर्धक अमुन रसादि सप्त धातु वाढविणारें आहे. याचा गुण सर्व रोगां वर शेंकडा ६४ पासून ९९ पर्यंत आहे.

### ९४ बालज्वरांकुश.

पिंपळी, येलिया, गुग्गुळ हे समभाग, लवंग -॥- भाग, अतिवीष एक भाग यांचा आल्याच्या रसांत खळ करून अर्धगुंज प्रमाण गोळ्या कराव्या त्या मधांत किंवा अंगा-बरील दुधांत देणें. याच्या योगानें मुलांचा ज्वर लवकर जातो, गुण शेंकडा ९१.

### ९५ त्रिफळाचूर्ण.

हिरडेदळ १ भाग, बेहडेदळ २ भाग, आवळकाठी

४ भाग यांचें चूर्ण करून त्या चूर्णाम वावडिंग, खैर, हिरडा, बेहडा, आवळी यांच्या वृक्षांची साल, व माका या प्रत्येकाच्या रसाच्या पृथक् पृथक् सात सात भावना घाव्या. तें चूर्ण सावलींत वाळवावें. त्यांतील चार मासे प्रमाण चूर्ण घावें.

( १ ) नेत्ररोगांस तूप व मध विषम भागांनें घालून घावे यांत गुण शेंकडा ९०.

( २ ) वातरोगास तिळाचे तेलांत, गुण शेंकडा ७२.

( ३ ) पित्तास तूप व साखर यांत, गुण शें. ९४.

( ४ ) कफास मधांत, गुण शेंकडा ८०.

( ५ ) प्रमेहास थंड पाण्यांत गुण शेंकडा ६८.

( ६ ) विषमज्वर व मंदाग्नि यांस उष्ण पाण्यांत. गुण शेंकडा ७५.

( ७ ) सर्व प्रकारचे कुष्टास खैराचे काढ्यांत. गुण शेंकडा ४२.

### ९६ गुळवेलसत्व.

निंबावरील किंवा बोरीवरील जाड गुळवेल आणून तिचे लहान लहान तुकडे करावे. ते पाण्यानें स्वच्छ धुवून टाकावे. नंतर ते दगडी खलांत चांगले चेंचून एका कल्हईचे भांड्यांत स्वच्छ पाणी घालून त्यांत तो कुटलेला कल्क चार घटका भिजत घालावा, नंतर त्याच पाण्यांत चांगला कुस्करून त्याचा चोथा पिळून टाकावा व खाली राहिलेलें पाणी दुसऱ्या कल्हईच्या पात्रांत वस्त्रगाळ करून ठेवावें. ह्मणजे एक प्रहरानें सत्व तयार जमते. नंतर घरचें पाणी ओतून खाली राहिलेलें सत्व सावलींत वाळ-

वून ठेवावें. जशी गुठ्ठेवेल जाड तसें सत्व जास्त निघतें. हें चार गुंजांपासून ८ गुंजांपर्यंत अनुपान योजून द्यावें. अनुपानें. ( १ ) तुपांत दिल्यानें वायुचा नाश होतो, गुण शेंकडा ६०. ( २ ) साखरेत दिल्यानें पित्त शमते. गुण शेंकडा ८४. ( ३ ) मधांत दिल्यानें कफाचा नाश होतो. गुण शेंकडा ९४. ( ४ ) वातरक्तास एरंडेलांत गुण नाही, ( ५ ) आमवायु, उदर, व गुल्म यांस सुंठीसे काढ्यांत गुण शेंकडा ९८. ( ६ ) नेत्ररोगास क्षशीचें तुपांत, गुण शेंकडा ९८; ( ७ ) कोठे केंस होण्यास माक्याचे रसांत. गुण बरोबर येत नाही. ( ८ ) ज्वरास आल्याचे रसांत गुण, शेंकडा ९०. ( ९ ) पांडुरोग, जीर्णज्वर, यांस पुनर्नव्याचा रस व मध यांत, गुण शेंकडा ८०. ( १० ) ओकारी, अरुचि, कास, श्वास, उचकी यांत त्रिफला चूर्णांत व मधांत गुण शेंकडा ८२. ( ११ ) कावीळ, पित्त, प्रमेह यांस गुठ्ठेवेलीचे काढ्यांत मध घालून देणें गुण शेंकडा ९०. ( १२ ) दाहा, मूत्रकृच्छ, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, यांस गोखरू व दारूहळदीचे काढ्यांत गुण शेंकडा ८०. ( १३ ) क्षयावर खडीसाखर व तूप यांत, गुण शेंकडा ६४ ( १४ ) मूठव्याधीवर बाळहिरड्याचे काढ्यांत गुण शेंकडा ६०.

### ९७ प्रवाळभस्म.

पोंवळे किंवा पोंवळ्यांच्या कांड्या निंबुच्या रसांत ४ प्रहर भिजत घालाव्या. क्षणजे शुद्ध होतात. नंतर त्यांचें वखगाळ चूर्ण करून त्यांत एक गुलाबाचें फूल टाकून घोटावें. एकजीव करून कोरडे होईपर्यंत करावें. या

प्रमाणें २१ फुलें घोटार्वीं ह्मणजे उत्तम भस्म होतें.  
 ( प्रत्येक फूल घोटणें झाल्यावर उन्हांत ठेवावें ) किंवा गुलाब-  
 पाण्याची २१ सूर्यपुटें द्यावीं ह्मणजेही उत्तम भस्म  
 होतें. याचें घेण्याचें प्रमाण १॥ गुंजेपासून तीन गुंजा-  
 पर्यंत आहे. ( १ ) दीड मासा पिंपळाचें चूर्ण ६ मासे  
 मध यांत घेतल्यानें जीर्णज्वर, उष्णकास, श्वास, उचकी,  
 य्वांचा नाश होतो. शेंकडा गुण ९८. ( २ ) गार्डचें दूध  
 ९ तोळे व खडीसाखर ६ मासे यांत द्यावें ह्मणजे पित्ताचें  
 शमन होतें. गुण शेंकडा ८०. ( ३ ) प्रदरास गार्डचे  
 धारोष्ण दुधांत गुण शेंकडा ७५ ( ४ ) तुळशीचा रस ४  
 मासे, मध ६ मासे यांत द्यावें ह्मणजे वायूचा नाश होतो.  
 गुण शेंकडा ३४ ( ५ ) आम्ल्याचे मुरांब्यांत घेतल्यानें  
 भ्रम, पित्तप्रकोप, चक्कर, वेरी, यांचा नाश होतो. गुण  
 शेंकडा ८५. ( ६ ) आवळकाठीचें चूर्ण ४ मासे, खडी-  
 साखर ६ मासे, तूप एक तोळा यांत द्यावें ह्मणजे आम्ल-  
 पित्तापासून छातींत व गळ्यांत जळती लागते ती दूर  
 होते. गुण शेंकडा ९०. ( ७ ) दूध पावशेर, तूप १  
 तोळा, खडीसाखर ६ मासे यांत द्यावें ह्मणजे धातु घट्ट  
 होते, धातु वाढते, तेज आणि बळ प्राप्त होतें, पौष्टिक-  
 पणा येऊन कामोर्दीपन होतें. याचा गुण शेंकडा ८०  
 ( ८ ) जाग्रणपासून झालेल्या विकारावर याचा चांगला  
 उपयोग होतो. ( ९ ) तिडिकप्रमेहास तूप साखरेंत  
 द्यावें शेंकडा ७५ गुण येतो. यानें दाह शमन होतो.  
 शेंकडा ९० गुण.

९८ मंजूर भस्म.

हेतुदयाच्या शेंकडाचे कोळसे करून त्यांत १००

वर्षापलीकडील असे जुने लोहाचे कीट घालून भात्याने फुंकावे. चांगले लाल झाल्यावर गोमूत्रांत विझवावे. या प्रमाणे ७ वेळ विझविले झणजे शुद्ध होते.

शुद्ध लोहकिटाचे बारीक चूर्ण करून गोमूत्रांत व त्रिफल्याच्या काढ्यांत पृथक् पृथक् घोटून शरावसंपुटांत ठेवून मातकापड करावे, व गजपूट द्यावे झणजे उत्तम गुणकारी मंडूर तयार होतो. हा दोन गुंजांपासून चार गुंजांपर्यंत द्यावा. ( सर्व रोगांवर चालतो ) पुनर्नव्याचे काढ्यांत किंवा चूर्णाबरोबर दिल्यास पांडुरोगाची सूज, इतर सूज, हर्लामक, कामला आणि कुंभकामला यांचा नाश होतो. ताकात संग्रहणीवर द्यावा. याचा गुण पांडुरोग शेंकडा ७४; सूज शेंकडा ८०; हर्लामक कामला शेंकडा ९२; कुंभ कामला शेंकडा ७०; संग्रहणी शेंकडा ६० आहे.

### ९९ सुवर्णमाक्षिक भस्म.

सुवर्णमाक्षिकाचे वस्त्रगाळ चूर्ण करून कढईत तापवून ( लाल झाल्यावर ) त्रिफल्याचे काढ्यांत तीन वेळ ओतावे झणजे शुद्ध होते. नंतर शेळीचे मूत्र, आंबट ताक किंवा निंबूरसांत खलून परदांत घालून मातकापड करून एक गजपूट द्यावे झणजे उत्तम भस्म होते. हे एक गुंजेपासून ४ गुंजांपर्यंत अनुपान योजून द्यावे. याचा उपयोग सर्व रोगांवर होतो. त्रिफळा, त्रिकटू, मिरी व तूप ही याची विशेष अनुपाने आहेत. ( १ ) परम्यास वंशलोचन व पिठी साखर यात किंवा चंदनी तेलाचे येव पिठी साखरेत मिळवून त्यांत द्यावे गुण शेंकडा ८०. ( २ ) मूळव्या-



धीस लोणी, खडीसाखर व नागकेशराचें चूर्ण यांत गुण  
 शेंकडा ९५. ( ३ ) क्षयास मध व अडुळशाच्या पिक-  
 लेल्या पानाच्या रसांत, गुण शेंकडा ७४. ( ४ ) कुष्टास  
 पांढऱ्या पांगाऱ्याचें चूर्ण, पिठी साखर व लोणी समभाग  
 एकत्र करून त्यांत; गुण शेंकडा ४०. ( ५ ) कफास  
 मध पिंपळीत, गुण शेंकडा ८०. ( ६ ) पित्तास आवळ-  
 काठी चूर्ण, तूप, साखर समभाग यांत किंवा आवळ्याच्या  
 मुरांब्यात; गुण शेंकडा ९५ ( ७ ) मस्तकरोगांस गाईचें  
 तूप व खडीसाखर यांत; गुण शेंकडा ८८. ( ८ ) कंठ-  
 रोगास तूप व खडीसाखर यांत; गुण नाही. ( ९ ) पांडु-  
 रोगास पुनर्नव्याच्या काळ्यांत; गुण शेंकडा ७७. ( १० )  
 विषास तांदुळाचे धुवणांत; गुण नाही. ( ११ ) उदर-  
 रोगांस त्रिफळ्यांत घावें. गुण साधारण. ( १२ ) सुजेस  
 निर्गुडीचे किंवा पुनर्नव्याचे रसांत घावें गुण शेंकडा ९०.  
 ( १३ ) त्रिदोषास आल्याचा रस, तुळशीचा रस, व  
 मध यांत घावें गुण शेंकडा ६०. ( १४ ) धातुपुष्टीस हें  
 भस्म २ गुंजा व खडीसाखरेची पूड ६ मासे, पावशेर  
 गाईचे दुधात घालून ते दूध १४ किंवा २१ दिवस सेवन  
 करावें ह्मणजे धातुस्थानची कडकी जावून उष्णता शांत  
 होते व धातुपुष्ट होते. वीर्य पतन होत असल्यास तें बंद  
 होऊन चांगलें कामोद्दीपन होतें गुण शेंकडा ९५.

### १०० सुवर्णमालिनीवसंत.

सोन्याचा चूर किंवा बख १ तोळा, मोत्याचा चूर २  
 तोळे, हिंगूळ ३ तोळे, पांढरीं मिरी ४ तोळे, आणि  
 कळसापरी ८ तोळे या सर्वांचा एक जागीं खल करून

त्यांत गाईचें लोणी २॥ तोळे घालून एक दिवस चांगला खल करावा. नंतर निंबूचा रस घालून ४२ दिवस खल केला असतां हा वगंत उत्तम होतो. हा एक किंवा दोन गुंजा मध पेंपळीत दिला असतां पृष्ठि येते, आणि जीर्ण-ज्वर, क्षयरोग, कास, श्वास, शैत्य, गुदामय वायु, व गुल्मरोग हे दूर होऊन धातुगतज्वर, रक्तविकार, कृशत्व, वातरोग, वृद्ध मनुष्याचे रोग, गर्भीणीचे रोग, बाळंतरोग हेही त्वरित नाश पावतात. पथ्य दूध भात. याचा गुण सर्व रोगांवर शेंकडा ९९.

### पूराणिका.

१ पारदशुद्धि-निंबूचे रसांत खड्याचा हिंगुळ एक प्रहर खलून डमरूयंत्रांत घालून खाली जाळ करून त्यांतील पारा वर जाऊन बसतो. तोच शुद्ध पारा होय. हाच सर्व कार्यांचे ठायीं योजावा.

२ गंधकशुद्धि-आवळसरा गंधक घेऊन तो कढईत चौपट तूप घेऊन त्यांत पातळ करावा. नंतर तो गाईचे दुधावर फडकें ठेवून त्यांत ओतावा दुधांत पडेल तो शुद्ध गंधक जाणावा. तो वाळवून ठेवावा.

३ अभ्रकशुद्धि भस्म-काळा अज्राभ्रक कोळशाचे अग्निवर भात्याने किंवा फुंरणीने तापवून गाईचें दूध, त्रिफलाचा काढा, कांजी व गोमूत्र यांत पथक सात सात वेळ तापवून बुडवावें. ह्मणजे अभ्रक शुद्ध होतो. त्याचें कातरून बारीक चूर्ण करावें. वा चूर्णासमान कळमी सोरा

घेऊन दोहोंचा गोमूत्रांत खल करावा. नंतर गोळा करून शरावमंपुटांत ठेवून मातकापड करून गजपूट अग्नि द्यावा ह्मणजे पाढरें शुभ्र अभ्रकभस्म होतें. हें सर्व कामांत योजावें.

४ हिंगुळाची शुद्धि—हिंगुळ खळांत घालून मेंढीच्या दुधाचीं सात व निंबुरसाचीं सात पुटे द्यावीं. अशीं १४ पुटे दिलीं असतां शुद्ध होतो.

५ शिलाजितशुद्धि—शिलाजित गाईचे दुधांत, त्रिफळाचे काढ्यांत व माक्याचे रसांत वेगळा वेगळा एक एक दिवस खलून कोरडा करावा ह्मणजे शुद्ध होतो.

६ हिराकसशुद्धि—माक्याचे रसांत खलून वाळवावा ह्मणजे शुद्ध होतो.

७ हिंगाची शुद्धी—हिंगास रू ( कापूस ) लपेटून पेटवावा. कापूस जळल्यावर काढावा ह्मणजे शुद्ध होतो.

८ टांकणखाराची शुद्धि—कोळशाचे विस्त्रवावर लाही करावी ह्मणजे शुद्ध होतो.

९ भांगेची शुद्धी—तव्यावर घालून नुसती भाजावी व फडक्यांत घालून भिजवून तिचें स्वच्छ पाणी काढावें. नंतर सुकवून ठेवावी ह्मणजे शुद्ध होते.

१० अफूची शुद्धि—अफू खळांत घालून आल्याव्या रसाचीं ७ पुटे द्यावी ह्मणजे शुद्ध होते.

११ कुचल्याची शुद्धि—किंचित् तूप लावून निर्धूम अग्नीवर भाजाव्या ह्मणजे निया शुद्ध होतात.

१२ गुग्गुळ शुद्धि—त्रिफळाचे काढ्यांत दोळपत्रानें एक प्रहर शिजवावा. नंतर जाड बस्रानें गाळावा ह्मणजे शुद्ध होतो.

१३ कलखापरी शुद्धि-गोमूत्रांत ७ दिवस भिजत ठेवावी क्षणजे शुद्ध होते.

१४ मोरचूतशुद्धि-मोरचूत निंबूरसांत खळावा. त्याच्या समभाग टांकणखार व मध घेऊन त्याचा एकत्र खल करावा, व शरावसंपुटांत घालून गजपूट आवें क्षणजे उत्तम शुद्ध होतो.

### घंत्रें व अग्निपुटे.

१ डमरूयंत्र-खालचें मडकें लहान व वरचें दुप्पट मोठें अशीं दोन मडकीं आणून त्यांस आंतून व बाहेरून गोपीचंदनाचा पाण्यांत कालवून चांगला लेप करावा. व वाळूं द्यावा. नंतर लहान मडक्यांत हिंगूळ घालून त्यावर मोठें मडकें पालथें घालावें. आणि त्याचे तोंडाचे संधीस चुना १ भाग, कणीक २ भाग, एकत्र कालवून त्याचा संधिलेप मडकें होलेनासा करावा. मग तें चुलीवर ठेवून स्वर्ली ४ प्रहर अभि करावा. वरचे मडक्याचे बुडावर ओल्या फडक्याची घडी वारंवार बदलून ठेवित जावी. क्षणजे ४ प्रहरांनीं हिंगुळांतील पाश निघून वरचे मोठे मडक्याचे तयास जावून लागतो. नंतर तें यंत्र खाली उतरून वांकडें करून ठेवावें. निवाल्यावर वरच्या मडक्याचे बाजूस पारा जमून राहतो तो युक्तीने काढावा.

२ दोलायंत्र-ज्या द्रव्यांत औषध शुद्ध करणें असेल तें द्रव्य मडक्यांत घालावें. आणि जें औषध शुद्ध करावयाचें आहे त्याची पुरव्हुंडी करून मडक्याचे तोंडावर काढी ठेऊन तिला मडक्यांतील द्रव्यांत किंचित बसे

अशी ती पुरचुंडी लोंबती बांधावी व मडक्याचे तोंडावर परळ पालथा ठेवून संधिलेप करून तें मडकें चुलीवर ठेवावें. व खाली साधारण अग्नि करावा. ह्मणजे पुरचुंडी-तील औषध दोन घटकेनीं वाफेनें शुद्ध होतें

१ गजपूट—सव्वा हात चौरस खळगा खणून त्यांत अर्धा खळगा गोवऱ्यांनीं भरून त्यावर मातकापड केलेलें भांडें ठेवावें. नंतर तो खळगा गोवऱ्यांनीं पूर्ण भरून अग्नि द्यावा. अग्नि आपोआप विस्फल्यावर औषध काढावें. त्यास गजपूट ह्मणतात. किंवा हजार गोवऱ्या घालून अग्नि देतात त्यासही गजपूट ह्मणतात.

### परिभाषा.

१ अंगरस—उत्तम ओली वनस्पति आणून त्याचेळीं कुटून वस्त्रांत गाळून जो रस काढतात तो.

२ पुटपाक—ओली वनस्पति कुटून गोळा बांधून तो गोडा वडाचे किंवा एरंडाचे पानानीं गुंडाळून त्यावर अंगुष्ठप्रमाण मातीचा लेप करून त्यावर खालवर गो-वऱ्या घालून गोळ्याची माती तांबडी लाल होईपर्यंत भाजावी. नंतर गोळा बाहेर काढून माती व पानें फेंकून द्यावी. त्याचा आंतील शिजलेल्या द्रव्याचा रस काढावा. तो.

३ काढा—काढ्यांतील सर्व औषधें मिळून चार तोळे असावी. तीं एकत्र करून थोडीं कुटावीं व १६ पट पाणी घालून मंद अग्नीनें तें पाणी मातीच्या चिकण्या मडक्यांत आटवावें अष्टमांश उरला ह्मणजे काढा तयार झाला. शिजवितेवेळीं बर झांकण मात्र ठेवूं नये. नाहीं तर काढ्याचें पाणी दूषित होऊन विकार करील.

४ अवलेह-औषधांचे काढे, रस आदीकरून फिरून आटवून पाकासारखे घन ( दाट ) करितात त्यास अवलेह ह्मणतात.

५ चूर्ण-सुकलेले औषध बारीक कुटून वखगाळ करून ठेवावे त्यास चूर्ण ह्मणतात.

६ गुटिका-चूर्णाप्रमाणे बारीक औषधी करून त्यांत साखरेचा किंवा गुळाचा पाक घालून एकत्र घोटून त्याच्या गोळ्या करितात याचप्रमाणे मधांतही करितात त्यास गुटिका, वटिका ह्मणतात.

७ स्नेहपाक-( तेल व तूप सिद्ध करण्याचा प्रकार ) औषधे बारीक चटणीसारखी वांटून त्यांचे चौपट तेल अथवा तूप घ्यावे. त्या तेलाचे चौपट पाणी आदीकरून पातळ पदार्थ घ्यावे. सर्वाना एकत्र करून मंदामिने ते उ शिल्लक राहीपर्यंत करावे. पाणी जळले ह्मणजे पाक सिद्ध झाला. ते औषध गाळून ठेवावे.

८ पाक-साखरेचा किंवा गुळाचा पाक करून त्यांत स्मंगितलेली औषधे बारीक करून घालतात व मंद आंचेने शिजवितात. नंतर परातीस तूप लावून त्यावर शिजलेले औषध लावून थापून त्याच्या वड्या कापतात किंवा लाडू बांधतात त्यास पाक ह्मणतात.



## कठिण शब्दांचा अर्थ.

अ

आतिसार—हगवण. [णारें.  
अग्निदीप्तक—अग्निप्रदिप्त कर-  
अपचि—गंडमाळेचा भेद.

अपस्मार—फेंपरे, मिरगी, घुरें  
अर्दितवायु—तोंड व हनुवटी  
यांस वाकडें करणारा वायु.

अर्बुद—आवाळू.

अर्श—मुळव्याध.

अवलेह—औषधादिकांचे का-  
ढे इ० पुनः आटवून का-  
कवी सारखे घट्ट करितात ते

अश्मरी—मुतखडा.

आध्मान—पोट फुगणें.

आनाह—मलबद्धरोग.

अपामार्ग—आघाडा.

आम—आवरक्त.

आमवात—( आमवायु )

अंगरस—ओळी वनस्पती कु-  
टून जो रस निघतो तो.

इ

इंद्रजव—कुड्याचें बीं.

इंद्रावण—कडू इंद्रावणाचे वे-  
ल असून त्यास बेलफळा-  
एवढी पिवळी फळे येतात.  
( कंदल )

उ

उन्माद—उन्मत्तवायु.

उपदंश—गर्भीचा आजार.

उदावर्त—उदावर्त वायु.

क

कडुनिंब—वाळंतनिंब.

कज्जली—गंधक व पारा ए-  
कत्र खलून काजळासारखा  
करितात ती.

कबाबचिनी—नागकेशर

कर्णनाद—कानांत आवाज

होणारा रोग.

कल्क—ठेंचलेलें ओलें औषध.

कवचबी—कुहिरीचें बीं.

काकडशिंगी—जंगली हिर-

ड्याचें फूल.

कामला—कांवीळ, कामीन,

हळयारोग.

कामोद्दीपक-जीं औषधें शु-  
क्रधातून्ना वाढवून स्त्री  
भोगाविषयीं हर्षयुक्त श-  
क्ति देतात तीं.

कार्ळेंजिरे-कडूजिरे.

कास-खोकला.

कंकोळ-कापुरचिनी, शित-  
ळचिनी.

कांजी-तांदुळादिकांची पेज  
काढून मडक्यांत घालून  
तोंड बांधून १।३ दिवस  
राहूं द्यावी. ह्मणजे आपो-  
आप जी पेज आंबते ती.

कुळिथ-हुलगे.

कुष्ठ-कोड.

कृमि-जंतू, किडे. [ मूळ.

कुष्ठ-चोख, कांटेधोत्र्याचें

कोळिजन-जुन्या नागवेलीचें

मूळ.

ग

गुरुम-वायगोळा.

घ

चोख-पिसोळा, कांटेधोत्रा-

मूळ.

छ

छर्दी-भोकारी.

ड

डोरली-रानवांगी.

त

तज-बारकी दालचिनी.

तालिमखाना-कोळिस्ता.

त्रिकटु-सुंठ, मिर्, पिंपळी.

त्रिजात-दालचिनी, तमाल-  
पत्र, एरुची.

त्रिदोष-वान, पित्त, कफ,  
यांचा समुदाय.

त्रिफळा-हिरडा, बेहडा,  
आवळकाठी यांच्या टर-  
फलांचें समभाग चूर्ण.

त्रिशार-जवखार, सज्जिखार,  
टांकणखार.

द

दांती-दांतीचें झाड.

दरामुळें-सालवण (रानगांजा)

पिठवण, रिंगणी, डोरली

(रानवांगी) गोखरू, ऐरण

(टाकळा) टेंदू, पहाडमूळ

(वासनवेल) बेल, शिवण.

ध

धमासा-दुर्लभा. [ पारें.

धातुवर्धक-धातूला वाढवि-



न

बिबला-असाणा.

नागवेल-विज्याच्या पानाचा

भ

निशोत्तर-तेड. [ वेल. भावना-पुट देणें.

प

म

पटोल-कडु पडवळ.

मूत्रकृच्छ-उन्हाळी.

पाचक-पचन करणारें.

मूत्रशुक्र-मुत्रांतून धातु जाणें

पाढळ-पाहाडमूळ.

मूत्राश्मरी-मूतखडा.

पाठा-पाहाडमूळ.

मोचरस-सावरीचा डीक.

पार्श्वशूल-पाठीचा शूल.

मंड-दह्याची निवळी.

प्लीहा-पान्थरी. कौलु

य

पुटपाक-ओलें औषध पा-  
नांत गुंडाळून वर मातीचा  
लेप करून भाजून काढतात.यकृत-पोटांत उजवीकडे  
जो रांग होतो तो. (कौलु)

पुनर्नवा-वसू.

र

प्रकोप-क्षोभ. [ धुपणी.

रक्तार्श-रक्ताची मुळव्याध.

प्रदर-पांढरी किंवा तांबडी

रास्ना-मुंगुस वेल. [ चीक.

प्रमेह-परमा.

रुमामस्तकी-सुरूचे झाडाचा

व

प्रवाहिका-पातळ हगवण.

वटक-गोळ्या, लाडू.

पंबलवणें-मीठ, बांगडखार,

वमन-वांति, ओकारी.

सैधव, बिडलोण, संचळ,

वाजीकरण-वीर्यवृद्धि करून

पंचांग-फळ, मूळ, पान,

कामोत्तेजन करणारें औषध.

फूल, साल.

वातरक्त-रक्तपित्ती, सुन-

ब

बहिरी. [ खरूज.

बलवृद्धि-बल वाढविणारें.

विचारिका-बारीक फोडांची

बलकारक-बल उत्पन्न कर

विद्रधि-गांठ.

बाधार्थ-बहिरेपणा. [ णारें.

बिजया-भांग. हरीतकी.

|                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| विषमज्वर—कमीजास्त हो-      | शुक्र-रेत, वीर्य.         |
| णारा ज्वर. ( अनियामतज्वर ) | शोथ-सूज.                  |
| विपूचिका—पटकी, महामारी.    | श्विन्न—पांढरें कोड.      |
| विसर्प—इसप, धावरें.        | स.                        |
| विस्फोटक—आंगावर फोड        | सन्निपात—तीन दोषांचा कोप  |
| येतात तो रोग.              | किंवा क्षय.               |
| वृद्धि—वाढणें.             | समुद्रलोण—मीठ.            |
| वृष्य—वीर्यवृद्धीकर वाजी-  | स्तंभक—धातु घट्ट करणारें. |
| करण, कामोत्तेजक.           | स्वरस—अंगरस.              |
| श                          | हृ                        |
| शतावरि—सहस्रमुळी.          | हलीमक—पांडुरोगाचा एक      |
| शराव—मातीचा परळ.           | हिक्रा—उचकी [ भेद.        |
| शरावसंपुट—एका परळावर       | क्ष                       |
| दुसरा परळ ठेवून संपूट      | क्षुब्धोध—भूक लागणें.     |
| करितात तें.                |                           |





# जाहिरात.

सर्वत्र लोकांस कळविण्यांत येत कीं, आमचे-  
जवळ सर्व प्रकारच्या गोवांवरील औषधी, काढे,  
गुटिका, चूर्णे, पाक, अवळेह इत्यादि आहेत. रोगांचें  
लक्षण कळविलें असतां हटकून गुण, देणाऱ्या  
औषधांची योजना करूं! मग ते रोग कोणत्याही  
प्रकारचे असोत, त्यांचें आर्ह्यीं निर्मूलन करूं!!  
औषधीचा खर्च आगाऊ किंवा व्ही. पी. ने औषध  
पळविण्यांत येईल.

## १ मकरध्वज गुटिका.

ह्या गोळ्या ७ किंवा १४ दिवस घेतल्या असतां धातु  
जाणें बंद होतें, प्रमेह नाहीसे होताना, पुरुषत्व वाढतें,  
शक्ती प्राप्त होते. पौष्टिकता येते आणि कामोद्दीपन होऊन  
धातू घट्ट होते. किंमत ३० गोळ्यांस १ रुपया. १००  
गोळ्यांस ३ रु. शिवाय पोष्टेज.

## २ रतिकामोदय गुटि

ज्या स्त्रियांना कांहीं खोडी असून त्या योगानें संतती होत  
नसेल, ज्यांचीं मुलें उपजावें मरतात, ज्या काकवांचा आ-  
हेत, ज्यांना संततीची आवड आहे, अशा स्त्रियांनीं ह्या गुटि-  
कांचें सेवन करावें. क्षणजे ४।५ वे पाळीत हटकून गर्भ-  
धारणा होईल. गोळ्या वनस्पतीच्या आहेत डबईस किंमत  
४ रुपये. शिवाय पोष्टेज. अनुपान खर्डा सोबत.

## ३ अतिसारेंदु गुटिका.

ह्या गोळ्यांच्या योगानें सर्व प्रकारची हगवण लयास

जाते. गुण त्वरित येतो. पुरुष स्त्रिया व मुलें या सर्वांस उपयोगी. ३० गोळ्यांस १ रुपया. १०० गोळ्यांस ३ रुपये. शिवाय पोष्टेज.

#### ४ कालावर्तनचक्र.

ह्या गुटिकांच्या सेवनानें महामारीचा रोग होत नाही. गांवांत महामारीचा आजार चालू असतां ह्या गोळ्यांचें सेवन केलें असतां आजार बाधण्याची बिल्कूल भीती नाही. १ रुपयास ४० गोळ्या. १०० गोळ्यांस २ रुपये. शिवाय पोष्टेज.

#### ५ कालखड्ग.

कितीही जेराचा महामारीचा आजार बाधला तर या गोळ्यांच्या योगानें हटकून गुण येतो व रोगनिर्मुक्त होतो. याचा एकवेळ अनुभव घेउन पहावा. ३० गोळ्यांस १ रु. १०० गोळ्यांस ३ रु. शिवाय पोष्टेज.

#### ६ प्रमदानंद गुटी.

ह्या गोळ्या बाळंतरोगावर अप्रतिम गुण देणाऱ्या आहेत. शूळ, श्वास, कास, ज्वर, मूर्च्छा, कंप, मस्तकपिडा, बडबड, तृषा, दहा, तंद्रा, अतिसार, ओकारी इत्यादी उपद्रवांनीं युक्त व त्रिदोषात्मक अशा बाळंतरोगांचा हटकून नाश होतो. ३० गोळ्यांस २ रु. १०० गोळ्यांस ६ रु. अनुपानपत्र सोबत. शिवाय पोष्टेज.

#### ७ अपस्मारविध्वंस गुटी.

ह्या गोळ्यांच्या योगानें फेंपरें, किंवा घुरें, मिरगीचा किडा, उन्माद, स्मृतिनाश, भूत, पिशाच इ० कांची बाधा, बालग्रह इ० विकार लवकर नाश पावतात. ४० गोळ्यांस ३ रु.

**प्रदग्निध्वंस गुटी.**

ह्या गोळ्या १. योगाने स्त्रियांची तांबडी, पांढरी धुपणी नाश १. धुपणीचा सोमरोग ह्मणून भेद आहे तोही या गुळ्या मेवनाने दूर होतो. ह्या गोळ्या वरील रोगावर अचुक गुणकारी आहेत. ३० गोळ्यांस २ रु, शिवाय ट. ह.

**९ प्रमेहदर्पास्त्र गुटी.**

ह्या गोळ्या मधुमेह खेरीज करून बाकी सर्व प्रकारच्या परम्यावर उपयोगी पडतात. कोणत्याही प्रकारचा पर्मा असो तो त्वरित नाश पावतो. तिडिक १ प्रहरांत बंद होते. २० गोळ्यांस १ रु. १०० गोळ्यांस ४ रु. शिवाय ट. ह.

**१० अगदतंत्र.**

ह्या गोळ्या बालकांच्या सर्व रोगांवर उपयोगी पडतात. यांचे नेहमी सेवन केलें असतां बालकांस कोणताच रोग हांगार नाही. आंकडी, डवा, कृमि, श्वास इ० विकार त्वरित दूर होतात व मुलें पुष्ट होतात. अन्न व दुध चांगलें पचते. ९० गोळ्यांस १ रु. शिवाय ट. ह.

य शिवाय सर्व प्रकारच्या रोगांवरील औषधी तयार आहेत. मागविल्यास पाठवूं.

नाटपेड पत्र घेतलें जाणार नाही उत्तरास टिकीट असावें. पत्ता इंग्रजी किंवा बालबोध स्पष्ट लिहावा.

**रमाकांत बापूराव रत्नपारखी वैद्य.**

**आर्य संजीवन औषधालय.**

**मु० व पोष्ट-वरूड. जि० उमरावती. ( कच्छ. )**

## वनौषधी दुकान.

आमचे गांवाजवळून, सातपुडा, अमरकंटक, विंध्याद्रि इत्यादि पर्वतांच्या ओळी अगदी नजीक आहेत. आह्मी सदर पर्वतांतून उत्तम प्रकारच्या रसभरित वनस्पति, जमवून दुकान मांडून त्या वनस्पति विक्रीस ठेविण्या आहेत. ज्या कोणास कोणत्याही प्रकारची वनस्पति ( मुळ्या, राठ, पावें, फळे, फुले, ) इत्यादि पाहिजे असल्यास योग्य किंमतीस पाठवूं. औषधी खऱ्या आणि ताज्या पाठविण्यांत येतील ! दशमुळांच्या औषधी आणि काढ्यांची यादी आली असता त्याप्रमाणे काढ्यांच्या जिनसाही पाठवूं. एकवेळ मागणी करून अनुभव पहा.

डुकरकंद, भुईकोहरे, सावरकंद, पाहाडमूळ, वावडिंग, मुरडशेंग, बाहवा, मुसळ्या, इंद्रजव, भिलावे, चित्रक, सुरण, रोशेल गवत, करंज, टेंदू, ऐरज, मालकामोणी इ० वनस्पति आमचे पर्वतावर फार आहेत. ज्यांना जरूर असेल त्यांनी मागून अनुभव पहावा.

**पत्ता--**

**श्रीरंग बापूराव रत्नपारखी.**

**वनौषधी दुकान.**

**पोष्ट-वरुड. जि० उमरावती. ( बऱ्हाड. )**

